February-II 2014

Every Fortnight

बालहंस

- टेढ़ी है पर...
- शिव का वरदान
- क्रेजी किया रे
- हिमालय में अद्भुत वन्यजीवन

राजस्थान पत्रिका प्रकाशन

चित्रकथा : वीर गोरा-बादल

वर्ष- 28 अंक- 15
15-28 फरवरी, 2014 पृष्ठ- 68

शिव की महिमा

एक बार की बात है। भगवान ब्रह्मा और विष्णु के बीच आपसी श्रेष्ठता के लिए विवाद हो गया। अर्थात दोनों में से कौन अधिक गुणवान-श्रेष्ठ है। उन दोनों की श्रेष्ठता बताने के लिए भगवान शिव एक आग के खंभे के रूप में प्रकट हुए। जिसे लिंग के नाम से जाना गया।

भगवान विष्णु प्रकट हुए। लिंग के पांवों तक पहुंचने के लिए पृथ्वी के अंदर चले गये। वहीं ब्रह्माजी उस लिंग के मस्तक का पता लगाने के लिए आकाश-स्वर्ग की ओर चले गये। लिंग की खोज करने के लिए ब्रह्माजी आकाश में बहुत ऊपर तक चले गये। वहीं विष्णुजी पृथ्वी में बहुत नीचे तक चले गये। लेकिन लिंग और ऊपर व और भी नीचे होता चला गया। ब्रह्माजी ने देखा कि केतकी के फूल आकाश की ओर से नीचे आ रहे हैं। ब्रह्माजी ने फूल से पूछा, 'कहां से आ रहे हो?'

फूल ने कहा कि मैं शिवलिंग के ऊपर रखा हुआ था। आकाश से आ रहा हूं।

'ठीक है, मैं तुम्हें विष्णुजी के पास ले चलता हूं और उन्हें बता दूंगा कि तुम्हें लिंग के ऊपर से लेकर आ रहा हूं।'

'क्या ब्रह्माजी झूठ बोलेंगे। मैं तुम्हें श्राप देता हूं कि तुम मंदिरों में नहीं पूजे जाओगे।' एक तेज गड़गड़ाहट के साथ शिवजी की आवाज आयी। इसी कारण से केतकी के फूल भी शिव-पूजा में नहीं चढ़ाये जाते। और फाल्गुन में कृष्ण पक्ष में चतुर्दशी के दिन शिवलिंग प्रकट होना माना जाता है। उसी दिन शिवरात्रि मनायी जाती है।

पुराणों में एक और प्रसंग आता है कि देवताओं और दानवों द्वारा समुद्र मंथन किया गया। उससे अमृत और जहर दोनों निकले। जहर से संपूर्ण विश्व का विनाश हो सकता था। विश्व को बचाने के लिए भगवान शिव ने जहर पी लिया और संसार को विनाश से बचा लिया। लेकिन जहर पीने से शिवजी का गला नीला हो गया। तभी से उनका नाम नीलकंठ पड़ा। ऐसी भी मान्यता है कि भगवान शिव ने जिस दिन गरल पीया था, उसी दिन से शिवरात्रि मनायी जाती है।

लेखन/चित्रांकन : **वेणु वारियर**

वर्ष- 28 अंक-15 फरवरी (द्वितीय) 2014, जयपुर

कहानियां

ऐसे बदली तकदीर- 8-9
शिव का वरदान- 12-13

चित्रकथा

क्या-क्या नहीं सीखा- 15-17
तौर मोर-बादल-20-29
ई-मैन- 62-65

प्रतियोगिताएं

प्रतियोगिता परिणाम- 58
ज्ञान प्रतियोगिता- 59
रंग दो प्रतियोगिता- 60

विविध

टेढ़ी है पर....- 5-7
ऐसी बनी डाक मुहर- 10
शब्द चित्र- 11
सीख सुलझी- 14
बालहंस न्यूज़- 30-31
सैर-सपाटा-32-33
बालहंस पोस्टर- 34-35
क्रेज़ी किया रे- 36-37
बोलें अंग्रेज़ी- 39
गुदगुदी- 40-41
सामान्य ज्ञान- 42-43
तथ्य निराले- 44-45
क्यों और कैसे/कमाल है- 46
क्रीसवर्ड पज़ल्स- 47
आर्ट जंक्शन- 50-51
बालनंत- 48
नोलेज बैंक- 49
दिखाना तो बताना/ ग्राफ से
चित्र/ अंतर बताओ- 52-53
किड्स क्लब- 54-55
हिमालय में अद्भुत
वन्यजीवन- 56-57
ढूंढो तो...- 61
कैसा लगा- 66

संपादकीय सम्पर्क

बालहंस (पाक्षिक)
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान) पिन-302 004
दूरभाष: 0141-3005857
e-mail: balhans@epatrika.com

संपादक
आनन्द प्रकाश जोशी

उप संपादक
मनीष कुमार चौधरी

संपादकीय सहयोग
किशन शर्मा

चित्रांकन
प्रतिमा सिंह

पृष्ठ सज्जा: देवीसिंह
कवर डिजाइन: मनीष शर्मा

आहक शुल्क

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से बालहंस, जयपुर के नाम भिजवाएं।
वार्षिक- 240/-रुपए,
अर्द्धवार्षिक- 120/-रुपए

सब्सक्रिप्शन एवं वितरण संबंधी जानकारी के लिए 0141-3005825 पर संपर्क करें।

प्रत्येक कार्य अपने समय से होता है, उसमें उतावली ठीक नहीं। जैसे पेड़ में कितना ही पानी डाला जाय, पर फल वह अपने समय से ही देता है।

संपादकीय

दोस्तो,

निरन्तर मेहनत और अभ्यास का अपना महत्त्व है। अपने हुनर को पाने और उसे विकसित करने के लिये यह बेहद जरूरी भी है। इसी संदर्भ में एक कथा है। एक बार भोले शंकर ने पार्वती को साक्षी बनाकर संकल्प किया कि जब तक यह दुष्ट दुनिया सुधरेगी नहीं, तब तक शंख नहीं बजाएंगे। बरसात रुक गई। अकाल-दर-अकाल पड़े। पानी की बूंद तक नहीं बरसी। शंकर भगवान शंख बजाएं तो बरसात हो। दुनियाभर में हाहाकार मच गया। संयोगवश एक बार शंकर-पार्वती आकाश में उड़ते हुए जा रहे थे तो उन्होंने एक अजीब दृश्य देखा। एक किसान भरी दोपहरी जलती धूप में खेत की जुताई कर रहा है। पसीने में सराबोर, मगर अपनी धुन में मगन। जमीन पत्थर की तरह सख्त हो गयी थी। फिर भी वह जी-तोड़ मेहनत कर रहा था, जैसे कल-परसों ही बारिश हुई हो। भोले शंकर को बड़ा आश्चर्य हुआ कि पानी बरसे तो बरस बीते। शंकर-पार्वती आकाश से नीचे उतरे। उससे पूछा, 'अरे बावले! क्यों बेकार कष्ट उठा रहा है! सूखी धरती में केवल पसीने बहाने से ही खेती नहीं होती।'

किसान ने एक बार आंख उठा कर उनकी ओर देखा और फिर हल चलाते-चलाते ही जवाब दिया, 'हां, बिल्कुल ठीक कह रहे हैं आप। मगर हल चलाने का हुनर भूल न जाऊं, इसलिए मैं हर साल इसी तरह पूरी लगन के साथ जुताई करता हूं। मेरी मेहनत का अपना आनंद भी तो है। केवल लोभ की खातिर ही मैं खेती नहीं करता।' किसान के ये बोल कलेजे को पार करते हुए शंकर भगवान के मन में बैठ गये। सोचने लगे, मुझे भी शंख बजाए बरस बीत गए। कहीं शंख बजाना भूल तो नहीं गया! उन्होंने खेत में खड़े-खड़े ही झोली से शंख निकला और जोर से फूंका। चारों ओर घटाएं उमड़ पड़ीं और पानी बरसने लगा। तो दोस्तो, यह सब किसान के निरन्तर परिश्रम का ही फल था, जो शिव भी शंख बजाने से रुक न सके। सही कहा है, लगातार प्रयास के चलते तो जड़मति भी चतुर सुजान हो जाता है।

तुम्हारा बालहंस

पीसा की मीनार

टेढ़ी है पर...

पीसा की मीनार से भला कौन परिचित नहीं है। मजे की बात यह है कि इस मीनार को इसकी लंबाई या चौड़ाई अथवा शिल्प से नहीं पहचाना जाता। न ही इसके बहुत पुरानी होने के कारण इसे गिनती में लिया जाता है। यह मीनार इसलिये जानी जाती है कि यह अन्य मीनारों की तरह चुपचाप सीधी नहीं खड़ी है। यह मीनार इतनी टेढ़ी है कि इसे देखकर लगता है कि यह अब तक सुरक्षित खड़ी कैसे है।

यह मीनार लकड़ी के लट्ठों को जमीन में गाड़कर उसके ऊपर बनाई गई है। मीनार थोड़ी ही बन पाई थी कि एक ओर से धरती में धंसनी शुरू हो गई। फिर भी इसको बनाना बंद नहीं किया गया। यह मीनार बहुत ऊंची ही नहीं, बहुत सुंदर भी है। इसका बाहरी भाग संगमरमर का बना हुआ है। इस मीनार का महत्व और भी अधिक हो गया है, क्योंकि विश्वविख्यात इटालियन ज्योतिषी-वैज्ञानिक गैलीलियो ने आज से कोई ५ साल पहले इस पर अपनी विद्या का प्रयोग किया था।

गैलीलियो पीसा में प्रोफेसर थे। गैलीलियो से ६ साल पहले इटली में एक और विश्व-प्रसिद्ध विद्वान हो चुके थे, जिनका कहना था कि यदि हम एक ही सामग्री के बने हुए अलग-अलग भार के दो गोले लें और उन गोलों को एक साथ पृथ्वी पर गिराएं तो भारी गोला पहले जमीन पर पहुंचेगा। दो हजार साल तक सभी लोग इस सिद्धांत को सत्य मानते रहे। लेकिन गैलीलियो ने कहा कि भारी और हल्के दोनों ही गोले एक साथ जमीन पर पहुंचेंगे। लोग गैलीलियो का मजाक उड़ाने लगे, लेकिन वे हताश नहीं हुए।

पृष्ठ संख्या ५ पर जारी...

पृष्ठ संख्या ५ से जारी...

उन्होंने एक दिन पीसा विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों व छात्रों को एकत्र किया और अपना प्रयोग दिखलाने के लिए हाथ में दो गोले लेकर पीसा की मीनार पर चढ़ गए। एक गोले का बोझ दस पौंड था, दूसरे का एक पौंड। गैलीलियो ने मीनार पर दोनों गोले एक साथ गिराए। दोनों एक ही साथ जमीन पर आकर गिरे। फिर तो लोगों ने गैलीलियो को बड़ी प्रशंसा की, परंतु इसी के साथ उन पर एक मुसीबत भी आई। कुछ लोग गैलीलियो से बुरी तरह चिढ़ गए। इसलिए कि उन्होंने पूर्व प्रचलित सिद्धांत को असत्य सिद्ध कर दिखाया था। विरोधियों ने गैलीलियो के व्याख्यानों में गड़बड़ी पैदा करनी शुरू कर दी। विवश होकर गैलीलियो को पीसा नगर छोड़कर अन्यत्र जाना पड़ा।

वर्ष क्क्ख्प में पीसा अमीरों का शहर था। वहां के लोग अच्छे नाविक थे और व्यापारी भी। ये लोग येरूशलम, कार्थेज, स्पेन, अफ्रीका, बेल्जियम और नॉर्वे तक जाते थे। पीसा के लोगों और एक दूसरे इतालवी नगर फ्लोरेंस के लोगों का छ्त्तीस का आंकड़ा था। दोनों ने कई युद्ध लड़े थे और फ्लोरेंस के लोगों को नीचा दिखाने और अपना बड़प्पन साबित करने के लिए ही ये विशाल मीनार बनाने की शुरुआत पीसा में हुई।

इसके पहले वास्तुशिल्पी, यानी बनाने वाले थे बोनानो पीसानो। मीनार का निर्माण शुरू होने के क्ख साल बाद ही साफ हो गया कि ये टेढ़ी हो रही है, लेकिन तब तक इसकी त में से फ मंजिलें बन चुकी थीं। और आज तक बड़े जतन से इस मीनार को गिरने से बचाया जाता रहा है। मीनार बनने का काम शुरू होने के लगभग त्फ साल बाद पीसा अब उतना बड़ा शहर नहीं रहा है, लेकिन अब भी दुनिया भर से लोग पीसा की इस मीनार को देखने आते हैं।

अब बात करते हैं इसके टेढ़ेपन की। दरअसल इस मीनार पर गिरने का खतरा मंडरा रहा था, क्योंकि यह साल दर साल एक से दो मिलीमीटर झुकती चली जा रही थी। विशेषज्ञों को डर था कि कहीं यह गिर न जाए। इसी वजह से अब इसे ख्ब सेंटीमीटर सीधा किया गया है। लेकिन यह कोई एक या दो दिन में नहीं हो गया, इस कामयाबी को पाने में भी पूरे क्क साल लगे। रेस्टोरेशन का यह काम वर्ष ख्क में शुरू किया गया था। प्रॉजेक्ट में लगे विशेषज्ञों का कहना है कि अब यह टावर ड से फ साल तक के लिए सुरक्षित हो गया है।

टावर का भीतरी शिल्प

उनका यह भी मानना है कि इस तकनीक से पीसा की मीनार को पूरी तरह सीधा किया जा सकता है। हालांकि शायद ऐसा करना उचित भी नहीं होगा, योंकि यह इस टावर के अहम गुण को ही खो देना होगा, जो शायद लोगों को पसंद न आए। स्थानीय लोग यह तो चाहते हैं कि टावर को मजबूत किया जाए, लेकिन यह नहीं चाहते कि टावर को सीधा किया जाए। इस टावर को देखने हर साल म लाख लोग आते हैं। साथ ही, इसके आठ मंजिलों तक चढ़ने के टिकट से भी लाखों मिलियन यूरो की कमाई होती है।

क्ष्भ टन और करीब क्क्ष फीट ऊंची इस टावर को दस साल के लिए बंद कर दिया गया था। इसके फाउंडेशन में पानी डालकर और स्टील केबल की मदद से इस टावर को सीधा करने की कोशिश की गई। प्रोजे ट की शुरुआत में ही फ्क सेंटीमीटर तक टावर सीधा हो गया था। लेकिन प्रोजे ट पूरा होने के बाद इसे ख्भ सेंटीमीटर सीधा ही पाया गया।

विशेषज्ञों का कहना है कि पीसा मीनार को सीधा करना उनका उद्देश्य कभी नहीं था, उन्हें डर था कि मीनार झुकते-झुकते गिर ही न जाए। वर्ष क-प में इसकी नींव में सीमेंट भरा गया, लेकिन मीनार और धंसने लगी। वर्ष क-- में यह मीनार चार मीटर से भी ज्यादा झुक गई थी। जिसके बाद यह अंदेशा था कि वर्ष ख्प-ठ के बीच यह गिर जाएगी। पीसा की मीनार बनने की शुरुआत वर्ष क्क्ख्प में हुई थी। तीन मंजिलें बनने के बाद समझ में आया कि यह मीनार टेढ़ी है। वर्ष क्प्क- में सातवीं मंजिल बनी। फिर वर्ष क्क्ख्ख में इस मीनार में घंटी लगाई गई। मीनार बनने में कुल ख साल लगे। कुछ भी कहो, पीसा टावर टेढ़ी है, पर है बेमिसाल।

□□□

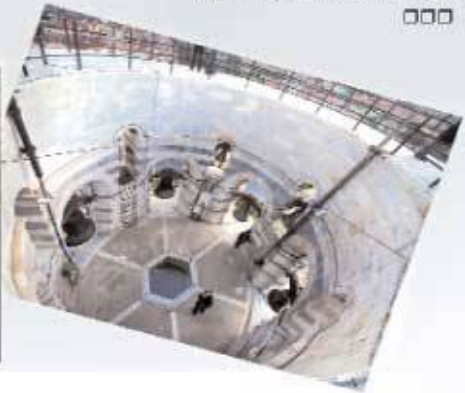

उनका यह भी मानना है कि इस तकनीक से पीसा की मीनार को पूरी तरह सीधा किया जा सकता है। हालांकि शायद ऐसा करना उचित भी नहीं होगा, योंकि यह इस टावर के अहम गुण को ही खो देना होगा, जो शायद लोगों को पसंद न आए। स्थानीय लोग यह तो चाहते हैं कि टावर को मजबूत किया जाए, लेकिन यह नहीं चाहते कि टावर को सीधा किया जाए। इस टावर को देखने हर साल म लाख लोग आते हैं। साथ ही, इसके आठ मंजिलों तक चढ़ने के टिकट से भी लाखों मिलियन यूरो की कमाई होती है।

क्ष्भ टन और करीब क्क्ष फीट ऊंची इस टावर को दस साल के लिए बंद कर दिया गया था। इसके फाउंडेशन में पानी डालकर और स्टील केबल की मदद से इस टावर को सीधा करने की कोशिश की गई। प्रोजे ट की शुरुआत में ही फ्क सेंटीमीटर तक टावर सीधा हो गया था। लेकिन प्रोजे ट पूरा होने के बाद इसे ख्भ सेंटीमीटर सीधा ही पाया गया।

विशेषज्ञों का कहना है कि पीसा मीनार को सीधा करना उनका उद्देश्य कभी नहीं था, उन्हें डर था कि मीनार झुकते-झुकते गिर ही न जाए। वर्ष क-प में इसकी नींव में सीमेंट भरा गया, लेकिन मीनार और धंसने लगी। वर्ष क-- में यह मीनार चार मीटर से भी ज्यादा झुक गई थी। जिसके बाद यह अंदेशा था कि वर्ष ख्प-ठ के बीच यह गिर जाएगी। पीसा की मीनार बनने की शुरुआत वर्ष क्क्ख्प में हुई थी। तीन मंजिलें बनने के बाद समझ में आया कि यह मीनार टेढ़ी है। वर्ष क्प्क- में सातवीं मंजिल बनी। फिर वर्ष क्क्ख्ख में इस मीनार में घंटी लगाई गई। मीनार बनने में कुल ख साल लगे। कुछ भी कहो, पीसा टावर टेढ़ी है, पर है बेमिसाल।

□□□

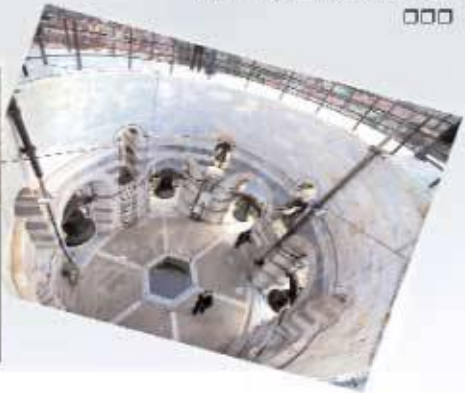

ऐसे बदली तकदीर

सी नगर में एक गांव था। गांव बहुत ही खुशहाल व अमीर था। सारे गांव में एक केशव का ही परिवार था, जो बहुत गरीब था। ऐसा भी नहीं था कि वह सदा से ही गरीब था। वह भी अपनी जवानी के दिनों में बहुत धनी हुआ करता था, लेकिन धीरे-धीरे उसकी दौलत उसके तीनों पुत्रों राम, श्याम और घनश्याम के कारण समाप्त होती गयी। वे तीनों बहुत ही आलसी और निठल्ले थे। पूरा-पूरा दिन वे गांव में यहां-वहां आवारा घूमते व शैतानियां करते। उन्हें बस अच्छा-अच्छा खाने व पहनने से मतलब था।

केशव को चिंता सताने लगी थी कि ऐसा ही हाल रहा तो एक दिन पुरखों के खेत व घर भी नीलाम हो जाएगा। उसे एक तरकीब सूझी। उसने तीनों लड़कों की शादी कर दी। उसने सोचा जब इनकी पत्नियां घर में आएंगी तो उन्हें थोड़ा-बहुत अपनी जि[illegible]मेदारियों का एहसास भी हो जाएगा और वे धीरे-धीरे काम करना भी शुरू कर देंगे। परंतु वैसा केशव ने सोचा, वैसा कुछ भी नहीं हुआ। शादी के बाद तो वे और भी निक[illegible]मे हो गए। अपना छोटा-मोटा कार्य जो वे पहले कर भी लेते थे, वह सब वे अब अपनी पत्नियों से करवाने लगे थे।

यह सब देखकर केशव और भी दुखी हो गया। घर में जो थोड़े-बहुत पैसे थे वो तो उसने इन तीनों के विवाह में खर्च कर दिए थे। केशव को अब यह डर सताने लगाने लगा था कि अगर यही हाल रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हमारा सब कुछ नीलाम हो जाएगा और हम भीख मांगते नजर आएंगे। एक दिन उसने तीनों लड़कों को आने वाले खतरे से सावधान करवाया तथा उनसे मेहनत करने के लिए कहा। लेकिन केशव की बातों का तीनों पर कोई असर नहीं पड़ा।

स्थिति को देखते हुए अब केशव के पास एक ही चारा बचा था। उसने तीनों बहुओं को आने वाले खतरे से अवगत कराया। बहुएं समझदार थीं, और सब भला-बुरा समझती थीं। इस स्थिति से निपटने के लिए सबने एक योजना बनाई। अब सबके पास इन आलसियों को सही राह पर लाने के लिए यह अंतिम योजना थी।

एक दिन केशव ने भरी पंचायत में यह घोषणा कर दी कि मैं अपने तीनों पुत्रों को अपनी जायदाद से बेदखल करता हूं, और इन्हें मैं अपने घर में तब तक नहीं आने दूंगा, जब तक ये तीनों मुझे कुछ न कुछ कमा कर नहीं ला देते। इसके लिए केशव ने तीनों को छह महीने का

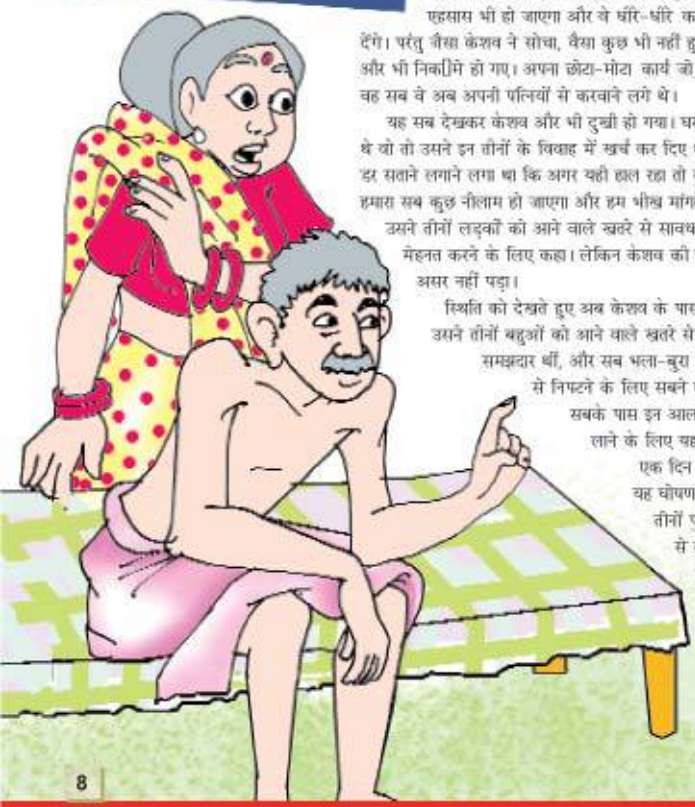

एक-दो दिन तो इन तीनों ने यहां-वहां गुजारा कर लिया। लेकिन जब कोई भी गांव वाला इन आलसियों को अपने घर में मु□त की रोटियां खाने के लिए रखने को तैयार न हुआ तो उन्होंने गांव में ही छोटा-मोटा कार्य करना शुरू कर दिया। लेकिन इन तीनों को कोई भी काम ढंग से न आने के कारण किसी ने भी इनको ज्यादा देर तक काम पर न रखा। तीनों भाईयों को अब धन की कीमत का एहसास हो चुका था। वे अब अपनी गलती पर पछता रहे थे।

अतः तीनों ने अब ठान लिया था कि वे गांववालों तथा अपने घर वालों को कुछ कमाकर दिखाएंगे। इसके लिए उन्होंने गांव छोड़कर शहर जाने का निश्चय कर लिया था।

राम और श्याम तो शहर चले गए, लेकिन घनश्याम शहर की सीमा पर स्थित एक दरिया किनारे वाले गांव में ही रह गया। किस्मत से राम और श्याम को शहर में अच्छी जगह पर काम मिल गया। उन्होंने दिन-रात जी-तोड़ मेहनत से काम करना शुरू कर दिया। घनश्याम दरिया के किनारे बैठ बांसुरी बजाता। गांव से आटा मांगता और उसकी छोटी-छोटी गोलियां बना के दरिया में मछलियों के लिए डालता। उसकी बांसुरी की आवाज को सुनकर अब रोज मछलियां आना शुरू हो गयी थीं। छह महीने बीतने को थे। जहां राम और श्याम दिन-रात एक करके अपने कार्य में जुटे थे, वहीं घनश्याम अभी भी मछलियों को ही आटा खिलाए जा रहा था।

एक दिन मछलियों के राजा ने मछलियों से कहा, 'तुम उस घनश्याम का दिया हुआ आटा यूं ही डकार जाती हो। □या तु□हें इसके बदले उसे कुछ देना नहीं चाहिए?' सभी ने हां में सिर हिलाया, पर साथ में अपनी यह असमर्थता भी प्रकट कर दी कि हम उसे भला □या दे सकती हैं? इस पर राजा ने दरिया में मौजूद हीरे-मोतियों को उसे देने को कहा। सभी ने राजा की बात मानी। सैकड़ों मछलियों ने मुंह भर कर हीरे-मोती घनश्याम के पास किनारे पर उड़ेल दिए। घनश्याम बहुत खुश हुआ।

घनश्याम के लिए इतने सारे हीरे-मोती यूं खुले में ले जाना सही नहीं था। उसने इन हीरे-मोतियों को गोबर के उपले बनाकर उनमें छिपा दिया। छह महीने बीत गए थे। घर वाले तीनों भाइयों का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। राम और श्याम शहर से बैलगाड़ी भरकर जरूरत का सामान तथा ढेर सारा रुपया लेकर आए। उन्हें देखकर केशव बहुत प्रसन्न हुआ। उनके पीछे-पीछे घनश्याम भी गधों में गोबर के उपले लादे हुए आ रहा था। सभी गांव वाले उस पर हंस रहे थे। केशव उसे देखकर बहुत नाराज हुआ।

कहानी

घनश्याम अपने पिता के पास गया और धीरे से उनके कान में कहा, 'पिताजी, आप मुझ पर व्यर्थ में नाराज न हों। ये उपले सिर्फ गोबर नहीं हैं। इनके अंदर मैंने हीरे-मोतियों को छुपाया है। अतः आप इन्हें चुपचाप मुझे अंदर ले जाने दें।'

केशव ने देखा, उपलों के अंदर सचमुच हीरे-मोती थे। केशव को अपने तीनों पुत्रों पर गर्व महसूस हो रहा था। आज वह बहुत खुश था, □योंकि अब उसके तीनों पुत्र मेहनत करना सीख गये थे तथा वह अब गांव का पहले जैसा सबसे धनवान व्य□ित भी बन चुका था। उसकी योजना ने उसको तक[illegible] दी थी।

शब्द चित्र

-रमेश बुजर

शिव का

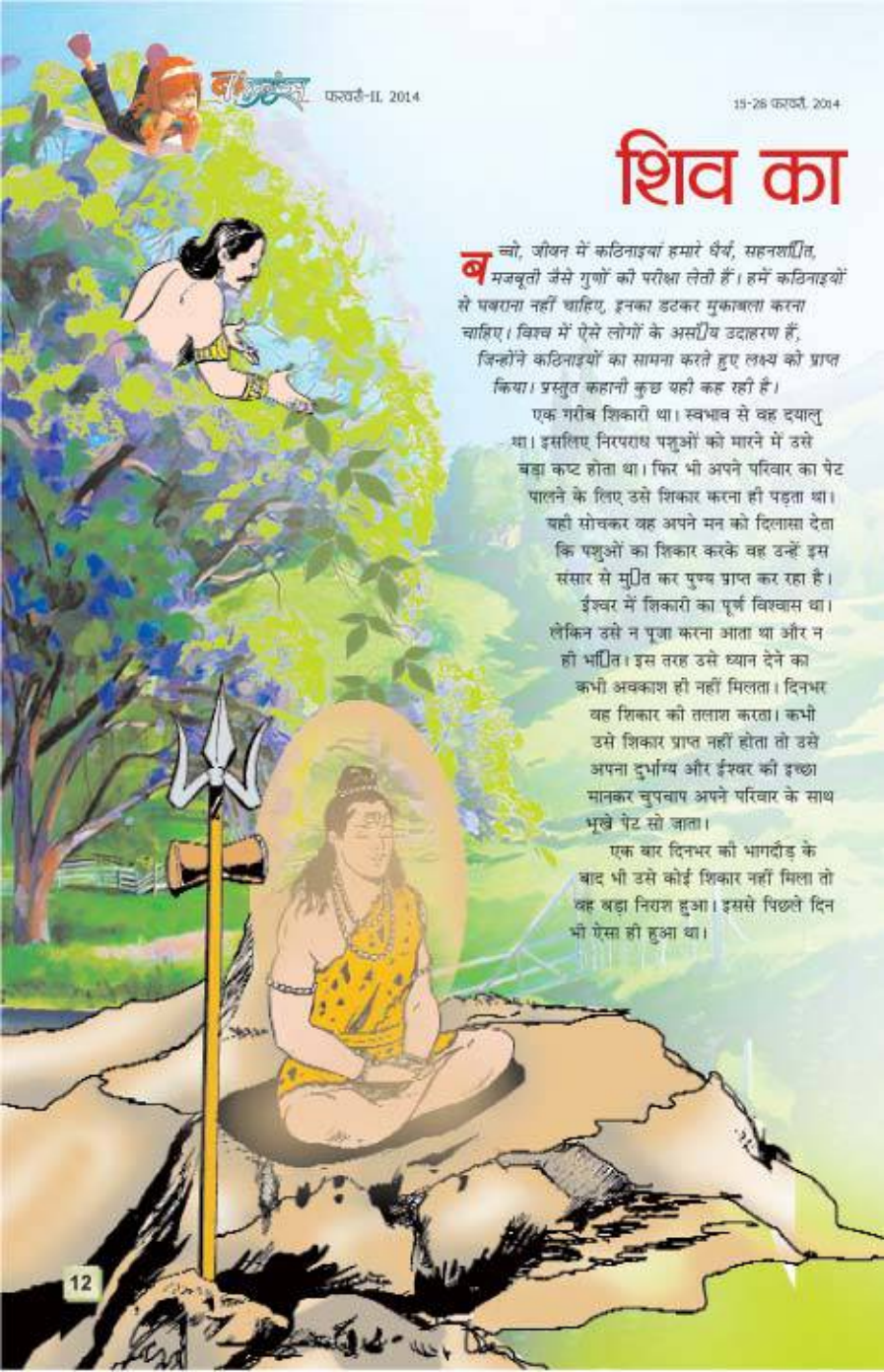

बच्चो, जीवन में कठिनाइयां हमारे धैर्य, सहनशक्ति, मजबूती जैसे गुणों की परीक्षा लेती हैं। हमें कठिनाइयों से घबराना नहीं चाहिए, इनका डटकर मुकाबला करना चाहिए। विश्व में ऐसे लोगों के असंख्य उदाहरण हैं, जिन्होंने कठिनाइयों का सामना करते हुए लक्ष्य को प्राप्त किया। प्रस्तुत कहानी कुछ यही कह रही है।

एक गरीब शिकारी था। स्वभाव से वह दयालु था। इसलिए निरपराध पशुओं को मारने में उसे बड़ा कष्ट होता था। फिर भी अपने परिवार का पेट पालने के लिए उसे शिकार करना ही पड़ता था। यही सोचकर वह अपने मन को दिलासा देता कि पशुओं का शिकार करके वह उन्हें इस संसार से मुक्ति कर पुण्य प्राप्त कर रहा है। ईश्वर में शिकारी का पूर्ण विश्वास था। लेकिन उसे न पूजा करना आता था और न ही भक्ति। इस तरह उसे ध्यान देने का कभी अवकाश ही नहीं मिलता। दिनभर वह शिकार की तलाश करता। कभी उसे शिकार प्राप्त नहीं होता तो उसे अपना दुर्भाग्य और ईश्वर की इच्छा मानकर चुपचाप अपने परिवार के साथ भूखे पेट सो जाता।

एक बार दिनभर की भागदौड़ के बाद भी उसे कोई शिकार नहीं मिला तो वह बड़ा निराश हुआ। इससे पिछले दिन भी ऐसा ही हुआ था।

वरदान

शिकारी ने अपने सामने साक्षात् भगवान शंकर को देखा तो वह आश्चर्यचकित रह गया। वह उनके चरणों में लेट गया। उसके मुंह से शब्द नहीं निकले।

कहानी

वह खाली हाथ घर लौटा था, और अपने भूखे बच्चों के साथ केवल पानी पीकर सो गया था। आज भी सुबह से वह भूखा-प्यासा था। भागदौड़ में वह पानी भी नहीं पी सका था। अब रात हो चली थी। पानी कहां ढूंढ़ता ? आसपास कहीं पानी नजर नहीं आ रहा था। खाली हाथ घर लौटना भी उसे अच्छा नहीं लग रहा था। इसलिए उसने आज रात्रि को भी जंगल में रहकर शिकार के लिए कोशिश करने का निर्णय लिया। खुले जंगल में नीचे रहना सुरक्षा की दृष्टि से उचित नहीं था। इसलिए उसने किसी वृक्ष पर चढ़कर वहीं से शिकार पर नजर रखने की सोची।

निकट ही एक काफी ऊंचा घना वृक्ष था। वृक्ष के नीचे एक बहुत पुराना और काफी बड़ा पुराना शिवलिंग था। जिसे उस शिकारी ने केवल एक पत्थर समझा। सहारे के लिए वह उसी शिवलिंग पर चढ़कर ऊपर वृक्ष की टहनियों पर जा पहुंचा। वहां पर उसने अपने को एक तरफ घनी पत्तियों में छिपा लिया और शिकार के लिए इधर-उधर नजरें फैलाने लगा।

जंगल में विचरण करने वाले हिरणों को अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए वह बीच-बीच में उस वृक्ष से कुछ पत्तियों को तोड़-तोड़ कर नीचे भी पटकने लगा। जो संयोगवश सीधे शिवलिंग पर जाकर गिरने लगीं। इस तरह पूरी रात बीत गयी। लेकिन कोई शिकार उस तरफ नहीं आया। शिकारी बेहद दुखी हुआ। उसे अपनी भूख-प्यास की तो इतनी चिंता नहीं थी, जितनी अपने बच्चों की चिंता थी, जो घर पर भूख और परेशानी की हालत में उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

धीरे-धीरे सुबह हुई। निराश और दुखी मन से शिकारी अपने स्थान से उठा और फिर शिवलिंग पर पैर रखकर नीचे उतर गया। संयोगवश पिछली रात जो शिकारी ने उस वृक्ष पर गुजारी थी, वह शिवरात्रि थी। पूरे दिन-रात भूखे-प्यासे रहने से अनजाने में ही शिकारी का व्रत हो गया था। शिकारी को न तो शिवरात्रि का ज्ञान था और न अनजाने में होने वाले अपने व्रत का।

लेकिन भोले भंडारी शिव, इससे बहुत प्रसन्न हुए। रात्रिभर शिकारी वृक्ष की जो पत्तियां नीचे डालता रहा, उन्हें शिव ने अपने पूजन के रूप में स्वीकार किया। वृक्ष पर चढ़ते हुए और अब फिर उतरते हुए शिकारी शिवलिंग पर चढ़ा, उसे भी शिव ने इस रूप में स्वीकार किया कि उस भक्त ने स्वयं अपने को ही संपूर्ण रूप में उन पर अर्पित कर दिया। इसलिए भोले भण्डारी ने प्रसन्न होकर तत्काल शिकारी को दर्शन दिये और उससे वर मांगने के लिए कहा।

शिकारी ने अपने सामने साक्षात् भगवान शंकर को देखा तो वह आश्चर्यचकित रह गया। वह उनके चरणों में लेट गया। उसके मुंह से शब्द नहीं निकले। वरदान की बात तो उससे समझ में ही नहीं आयी कि वह क्या मांगे। जब भगवान शंकर ने वरदान की बात को फिर से दोहराया तो उसके मुंह से बुदबुदाते से केवल ये शब्द निकले, 'भगवन्, मैं और मेरा परिवार बहुत कष्ट में है। हमें भोजन चाहिए प्रभु।'

भगवान शंकर ने 'तथास्तु' कहा और अन्तर्धान हो गये। शिकारी घर लौटा तो वह देखकर प्रसन्न हो गया कि उसकी झोंपड़ी के स्थान पर एक आलीशान भवन खड़ा है। द्वार पर सजी-धजी पत्नी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। मकान में सुख-सुविधा की सभी वस्तुएं थीं। पत्नी ने उसे बतलाया कि उसे अचानक ही बाहर निकलने की इच्छा हुई। सो, वह अपने बच्चों के साथ बाहर निकली। उसके बाहर निकलते ही कुछ ही क्षणों में उनकी झोंपड़ी इस आलीशान भवन में बदल गयी। इसके साथ ही आकाशवाणी हुई, 'यह सब तुम्हारा है। यहां आनंद से रहो।'

शिकारी और उसकी पत्नी ने भगवान शंकर को मन ही मन प्रणाम किया और वहां प्रेम से रहने लगे।

–योजेश चन्द्र शर्मा

बादशाह बना गुलाम

बल्ख के बादशाह हजरत इब्राहिम अपनी उदारता के लिए जाने जाते थे। वे एक आम इंसान की तरह बेहद सादगीभरा जीवन जीते थे और अपने सहयोगियों को भी वैसा ही जीवन जीने के लिए प्रेरित करते थे। उनमें जरा भी अहंकार नहीं था। वे हर समय जनकल्याण के कार्यों में लगे रहते और जब भी फुरसत मिलती, इबादत करते या विद्वानों के साथ विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श करते। वे हर समय हर किसी से कुछ नया सीखने के लिए तैयार रहते थे।

उस समय गुलामी प्रथा प्रचलित थी। एक बार उन्होंने भी अपने निजी कार्यों में मदद के लिए एक गुलाम खरीदा। उन्होंने गुलाम से पूछा, 'बता तेरा नाम क्या है?' गुलाम ने उत्तर दिया, 'जिस नाम से आप पुकारें।' बादशाह ने फिर पूछा, 'तू क्या खाएगा?' गुलाम ने कहा, 'जो आप खिलाएंगे।' बादशाह ने थोड़ी हैरत से पूछा, 'तुझे कैसे कपड़े पसंद हैं?' गुलाम ने जवाब दिया, 'जो आप पहनने को दें।' बादशाह फिर बोले, 'तू क्या काम करेगा?' गुलाम ने विनम्रतापूर्वक कहा, 'आप जो भी हुक्म करें।'

बादशाह दंग रह गए। उन्होंने इस तरह की बातें कभी नहीं सुनी थीं। उन्होंने पूछा, 'आखिर तू चाहता क्या है?' गुलाम ने सिर झुकाकर जवाब दिया, 'हुजूर गुलाम की अपनी क्या चाह?'

बादशाह गद्दी से उतरकर उसे गले लगाते हुए बोले, 'आज से तुम मेरे उस्ताद हो। तुमने अनजाने में ही मुझे बहुत बड़ी सीख दी है। किसी इंसान को यह हक नहीं कि दूसरे को गुलाम बनाए। तेरी बातों से पता चला कि खुदा के साथ हमारा रिश्ता कैसा होना चाहिए। हमें ज्यादा पाने की चाह नहीं रखनी चाहिए और पूरी तरह अपने आपको उसके हवाले कर देना चाहिए।'

सीख- विनम्रता व्यक्ति को महान बनाती है।

सीख सुहानी

परिंदों से सीखा पाठ

एक व्यक्ति किसी प्रसिद्ध सूफी संत के पास धर्म संबंधी ज्ञान हासिल करने गया। उस फकीर की चारों ओर ख्याति थी। कहा जाता था कि उनके आशीर्वाद से बीमार लोग स्वस्थ हो जाते थे और बहुतों की परेशानियां दूर हो जाती थीं। दूर प्रांतों से दुखी-पीड़ित लोग उनके यहां दुआएं मांगते और प्रसन्न होकर जाते। जब वह व्यक्ति संत के पास पहुंचा तो उसने देखा कि संत के हाथ में एक टोकरी थी और वे उसमें से दाना निकालकर पक्षियों को चुग रहे थे। परिंदे मजे में दाना चुग रहे थे।

यह देख संत किसी बच्चे की तरह खुश हो रहे थे। इस तरह दाना चुगाते हुए लंबा समय बीत गया। संत ने उस व्यक्ति की ओर देखा तक नहीं। वह शख्स परेशान हो गया और जब वह संत की ओर बढ़ा, तो संत ने उसे बिना कुछ कहे उसके हाथ में टोकरी थमा दी और कहा, 'अब तुम पक्षियों के साथ मजे करो। वह व्यक्ति सोचने लगा, कहां मैं इनसे आध्यात्मिक साधना का रहस्य जानने आया हूं और ये हैं कि मुझे पक्षियों को दाना चुगाने को कह रहे हैं।

संत ने उसके मन की बात पढ़ ली और बोले, 'स्वयं की परेशानियों को भुलाकर हर जीव को आनंद पहुंचाने का प्रयत्न ही जीवन की हर सिद्धि और आनंद का राज है। यदि तुम स्वयं सुख और आनंद पाना चाहते हो तो यही दूसरे को भी देना सीखो। तुम यदि यह साध सके तो समझ लो, यही तुम्हारी साधना है। जो लोग आध्यात्मिकता को किसी खास नियम और जीवन शैली में देखते हैं, वे उसके नैसर्गिक पक्ष से वंचित रह जाते हैं। आध्यात्मिक जीवन का अर्थ है, दूसरों को सुख बांटना। ऐसा करने पर परमात्मा का वैभव बरसने लगता है और साधक की हर दुआ कबूल हो जाती है। फकीर की बात से वह व्यक्ति संतुष्ट हो गया।

सीख- परोपकार से बढ़कर कोई पुण्य नहीं है।

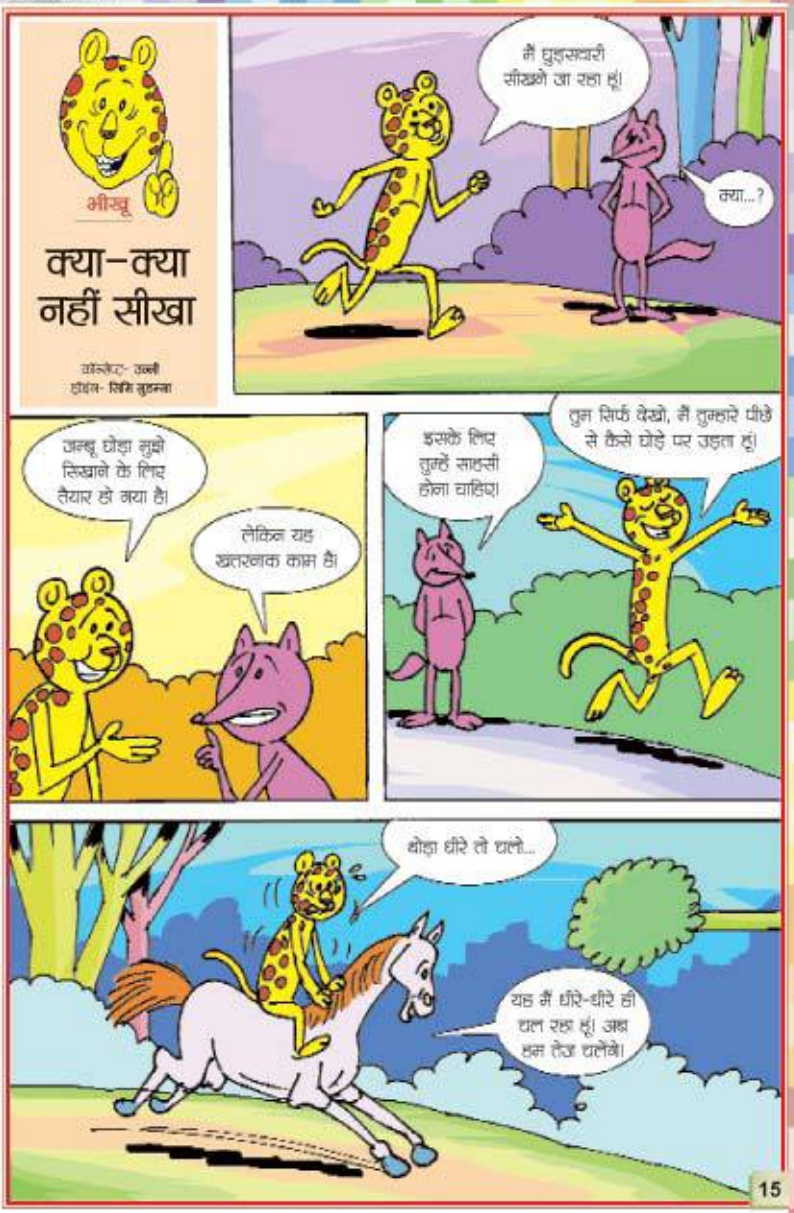
भीखू
क्या-क्या नहीं सीखा
मैं घुड़सवारी सीखने जा रहा हूं।
क्या...?
जन्नू घोड़ा मुझे सिखाने के लिए तैयार हो गया है।
लेकिन यह खतरनाक काम है।
इसके लिए तुम्हें साहसी होना चाहिए।
तुम सिर्फ देखो, मैं तुम्हारे पीछे से कैसे घोड़े पर उड़ता हूं।
थोड़ा धीरे तो चलो...
यह मैं धीरे-धीरे ही चल रहा हूं। अब हम तेज चलेंगे।

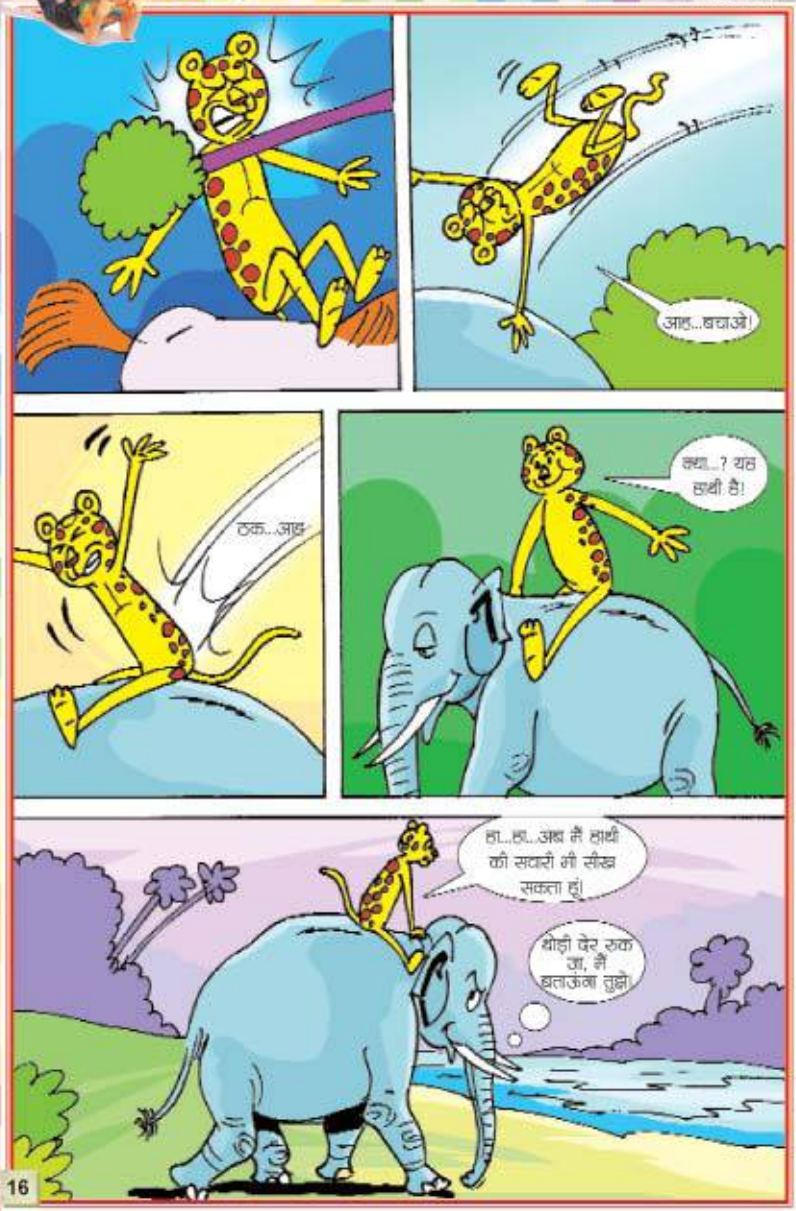
आह...बचाओ!
ठक...आह
क्या...? यह हाथी है!
हा...हा...अब मैं हाथी की सवारी भी सीख सकता हूं!
थोड़ी देर रुक जा, मैं बताऊंगा तुझे

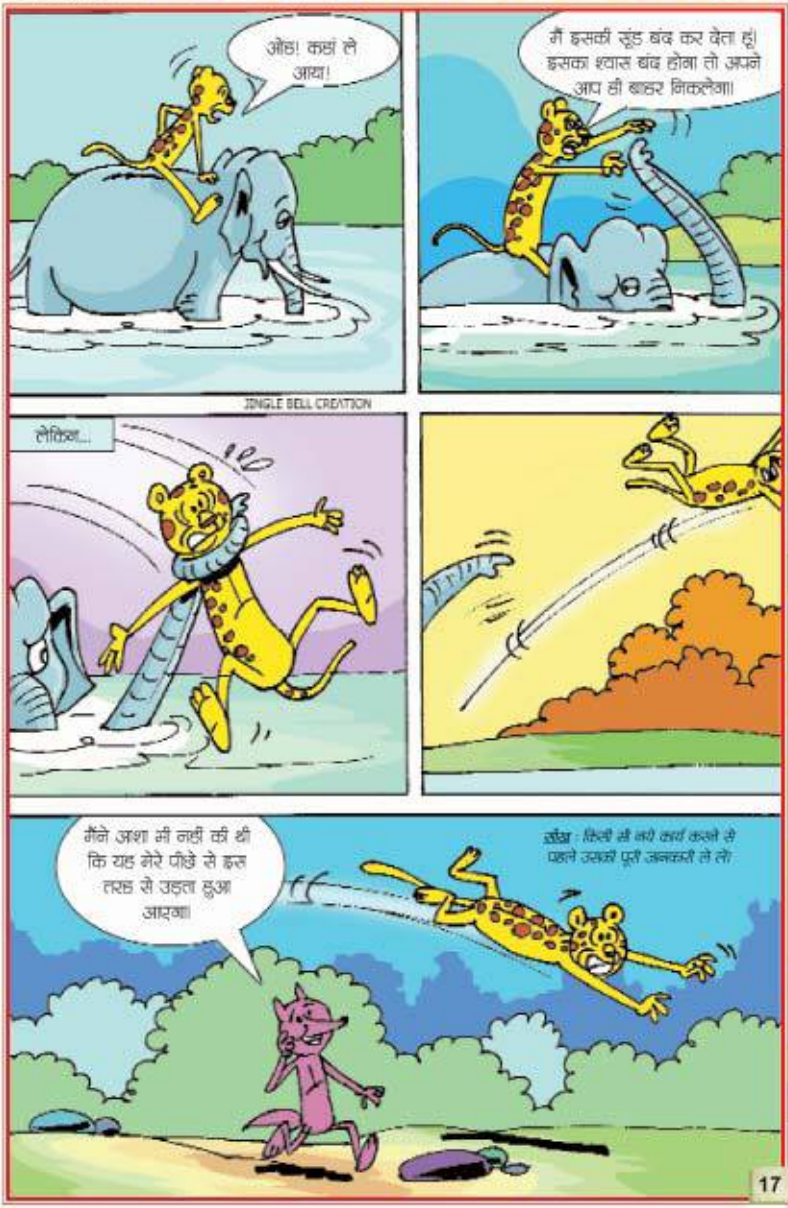
ओह! कहां ले आया!
मैं इसकी सूंड बंद कर देता हूं। इसका श्वास बंद होगा तो अपने आप ही बाहर निकलेगा।
JINGLE BELL CREATION
लेकिन...
मैंने आशा भी नहीं की थी कि यह मेरे पीछे से इस तरह से उड़ता हुआ आएगा।
सीख : किसी भी नई चीज़ करने से पहले उसकी पूरी जानकारी ले लो

माथापच्ची

नंबर wheel

कैसे खेलें

नंबर व्हील को हल करने के लिए अपनी तर्क शक्ति का प्रयोग करें। यहां एक संख्या शृंखला की गई है जो एक ही सिद्धांत के आधार पर क्रमबद्ध बढ़ती है। आपको उस शृंखला की लापता संख्या लिखनी है।

कैसे खेलें

वर्ड वेब में उन बस वेशों के नाम ढूंढिए, जहां मुस्लिम आबादी सर्वाधिक है। नाम ऊपर से नीचे और तिरछे भी हो सकते हैं।

वर्ड web

कैसे खेलें

नंबर पिरामिड बनाने के लिए प्रत्येक दो वर्गों की संख्या का योग उन दोनों वर्गों के ठीक ऊपर के वर्ग की संख्या से मेल खाना चाहिए।

नंबर pyramid

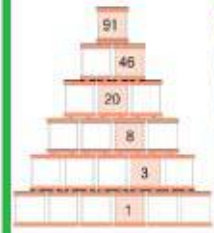

180-degree

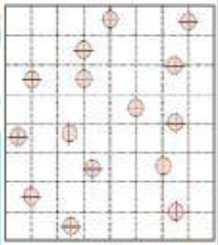

कैसे खेलें

पहेली को हल करने के लिए आप को ऐसी विभिन्न आकृतियां बनानी हैं जो गोलों के केंद्र बिंदु ऊपर से नीचे व बाएं से दाएं देखने पर एक जैसी ही नजर आएं। ध्यान यह रखना है कि गोले का एक ही बार प्रयोग हो व आकृतियां प्रत्येक वर्ग में नजर आएं।

नंबर wheel

वर्ड web

नंबर pyramid

180-degree

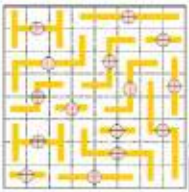

बूझो तो...!

1. कस्ता नकल व्यक्ति की
मैं लाखामृग हूं कहलाता।
पूछो अवरुक का जन्का अनर
तो मैं बता नहीं पाता।

2. कोई उलट न सकता मुझसे
बच्चा, बूढ़ा और जवानी
मुझे उलट कर देखो
लगता हूं मैं नौजवानी।

3. चार अक्षर का मेरा नाम
दिनदिन तारे बनाना काम।
लाभ, उत्सव या त्योहार
सब जलाएं बार-बार।

4. सरपट-लंबा हरा झंडा
कितना मीठा और रसीला।
सपेद तन हरी पूंछ
न बूझे तो नानी से पूछो।

5. सुबह-सुबह ही आता हूं
दुनिया की खबर सुनाता हूं।
बिन मेरे उजास हो जाते
सबका प्यारा सखा हूं।

6. तीन पैर की चंपा रानी
सुबह-सवेरे नहाया।
घायल-घायल को छोड़कर
कभी रोटी खाया।

7. तीतर के दो आगे तीतर
तीतर के दो पीछे तीतर,
बोलो कितने तीतर।

उत्तर

1. बंदर 2. दाढ़ी
3. दीपावली 4. मूली
5. अखबार
6. घायल-बैसाखी 7. तीन

Illusion

वीर गोरा-बादल

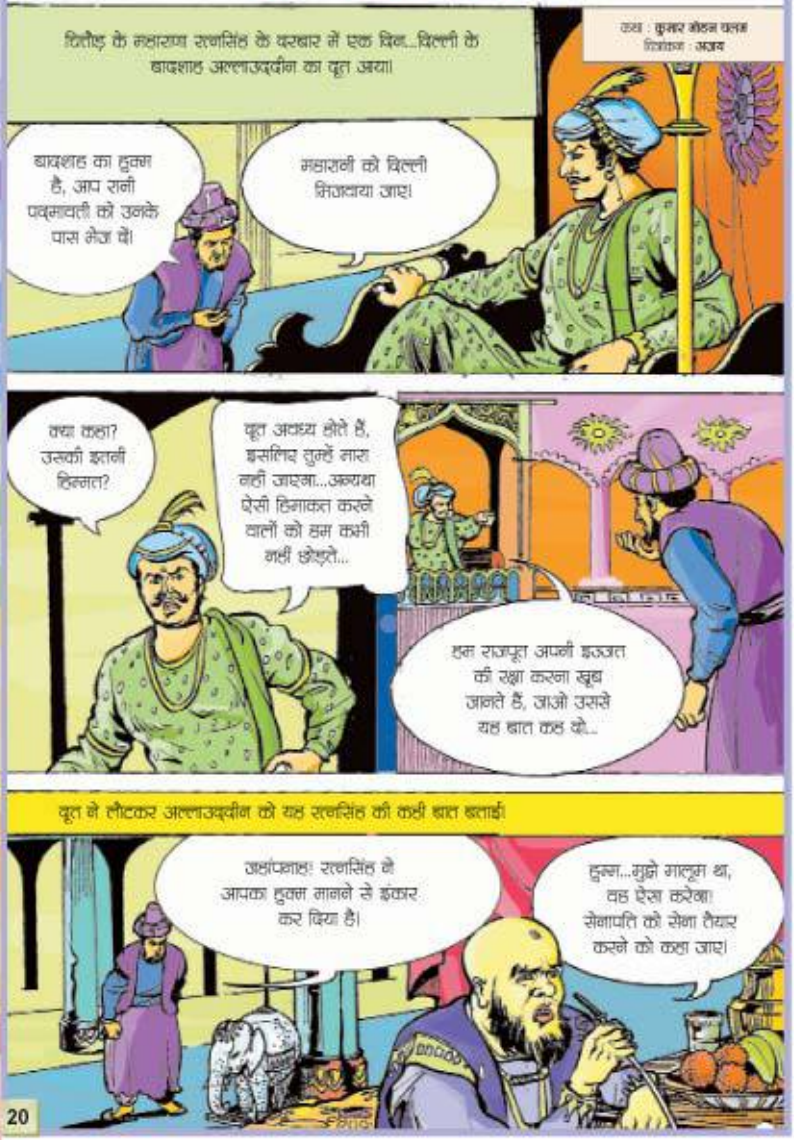
कथा : कुमार मोहन चलता
चित्रांकन : अजय
चित्तौड़ के महाराणा रत्नसिंह के दरबार में एक दिन...दिल्ली के बादशाह अल्लाउद्दीन का दूत आया।
बादशाह का हुक्म है, आप रानी पद्मावती को उनके पास भेज दें।
महारानी को दिल्ली भिजवाया जाए।
क्या कहा? उसकी इतनी हिम्मत?
दूत अवध्य होते हैं, इसलिए तुम्हें मारा नहीं जाएगा...अन्यथा ऐसी हिमाकत करने वालों को हम कभी नहीं छोड़ते...
हम राजपूत अपनी इज्जत की रक्षा करना खूब जानते हैं, जाओ उससे यह बात कह दो...
दूत ने लौटकर अल्लाउद्दीन को यह रत्नसिंह की कही बात बताई।
जहांपनाह! रत्नसिंह ने आपका हुक्म मानने से इंकार कर दिया है।
हुम्म...मुझे मालूम था, वह ऐसा करेगा। सेनापति को सेना तैयार करने को कहा जाए।

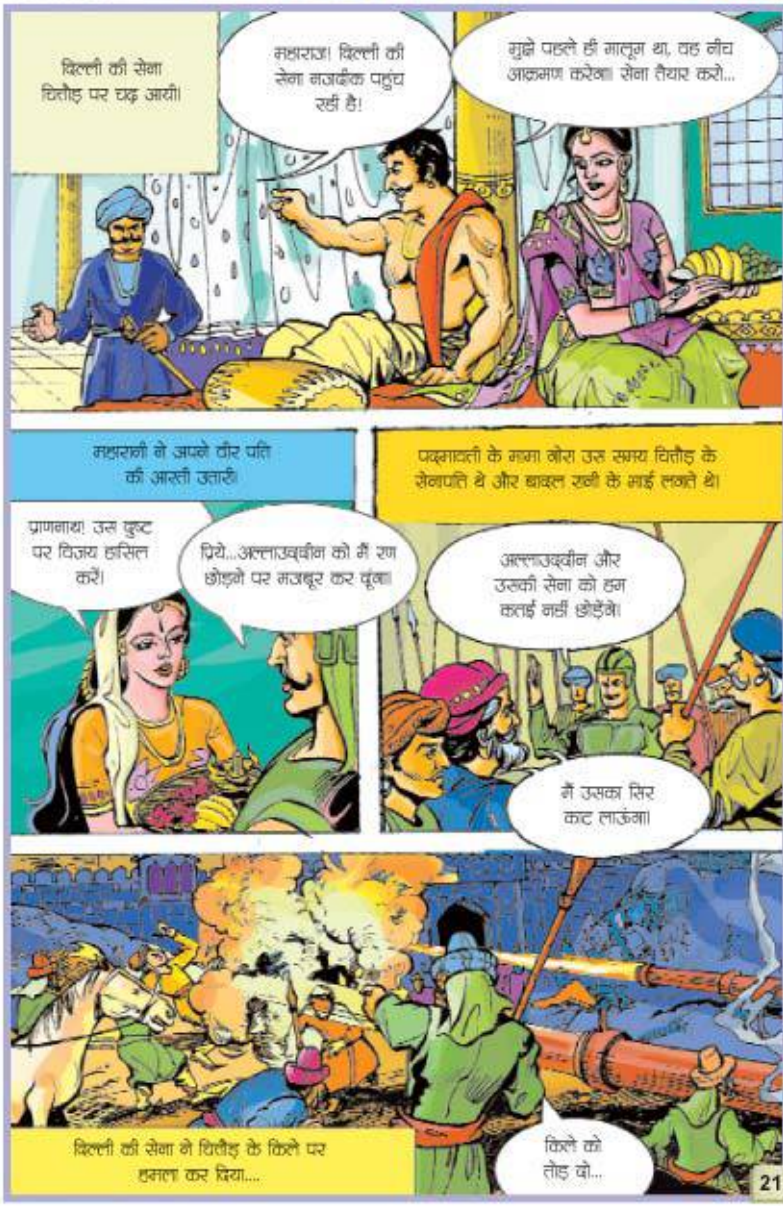
दिल्ली की सेना चितौड़ पर चढ़ आयी।
महाराज! दिल्ली की सेना नजदीक पहुंच रही है!
मुझे पहले ही मालूम था, वह नीच आक्रमण करेगा। सेना तैयार करो...
महारानी ने अपने वीर पति की आरती उतारी।
पद्मावती के मामा गोरा उस समय चितौड़ के सेनापति थे और बादल रानी के भाई लगते थे।
प्राणनाथ! उस दुष्ट पर विजय हासिल करें।
प्रिये...अल्लाउद्दीन को मैं रण छोड़ने पर मजबूर कर दूंगा।
अल्लाउद्दीन और उसकी सेना को हम कतई नहीं छोड़ेंगे।
मैं उसका सिर काट लाऊंगा।
दिल्ली की सेना ने चितौड़ के किले पर हमला कर दिया....
किले को तोड़ दो...

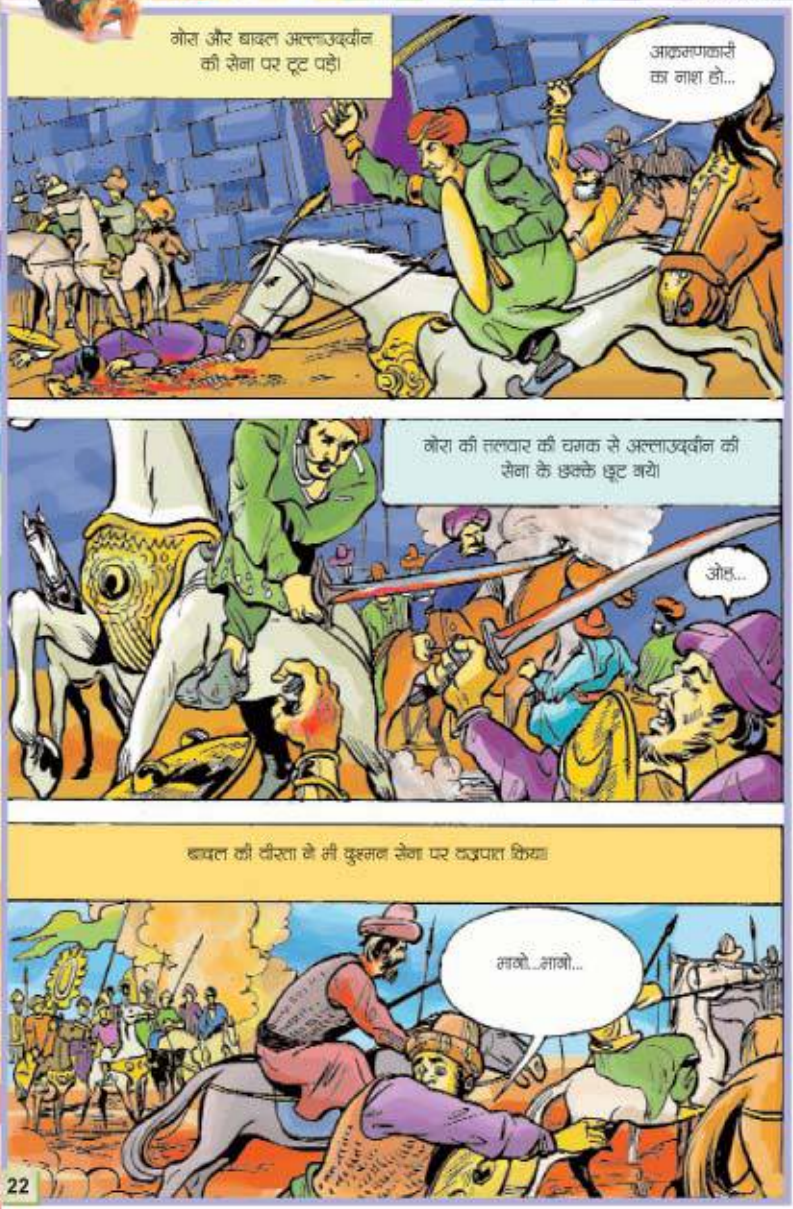
गोरा और बादल अल्लाउद्दीन की सेना पर टूट पड़े।
आक्रमणकारी का नाश हो...
गोरा की तलवार की चमक से अल्लाउद्दीन की सेना के छक्के छूट गये।
ओह...
बादल की वीरता ने भी दुश्मन सेना पर वज्रपात किया।
भागो...भागो...

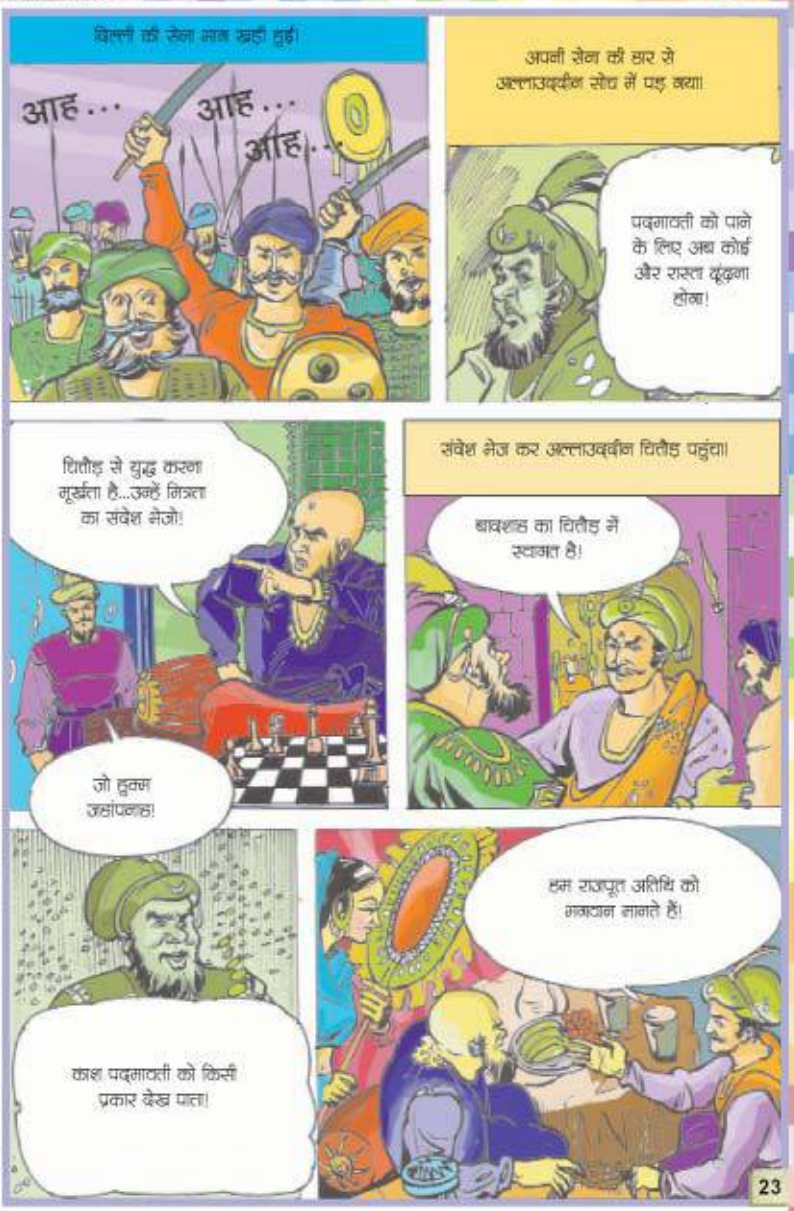
चित्तौड़ की सेना मार्ग खड़ी हुई।
आह...
आह...
आह...
अपनी सेना की हार से अल्लाउद्दीन सोच में पड़ गया।
पद्मावती को पाने के लिए अब कोई और रास्ता ढूंढना होगा।
चित्तौड़ से युद्ध करना मूर्खता है...उन्हें मित्रता का संदेश भेजो।
जो हुक्म जहांपनाह।
संदेश भेज कर अल्लाउद्दीन चित्तौड़ पहुंचा।
बादशाह का चित्तौड़ में स्वागत है।
काश पद्मावती को किसी प्रकार देख पाता।
हम राजपूत अतिथि को भगवान मानते हैं।

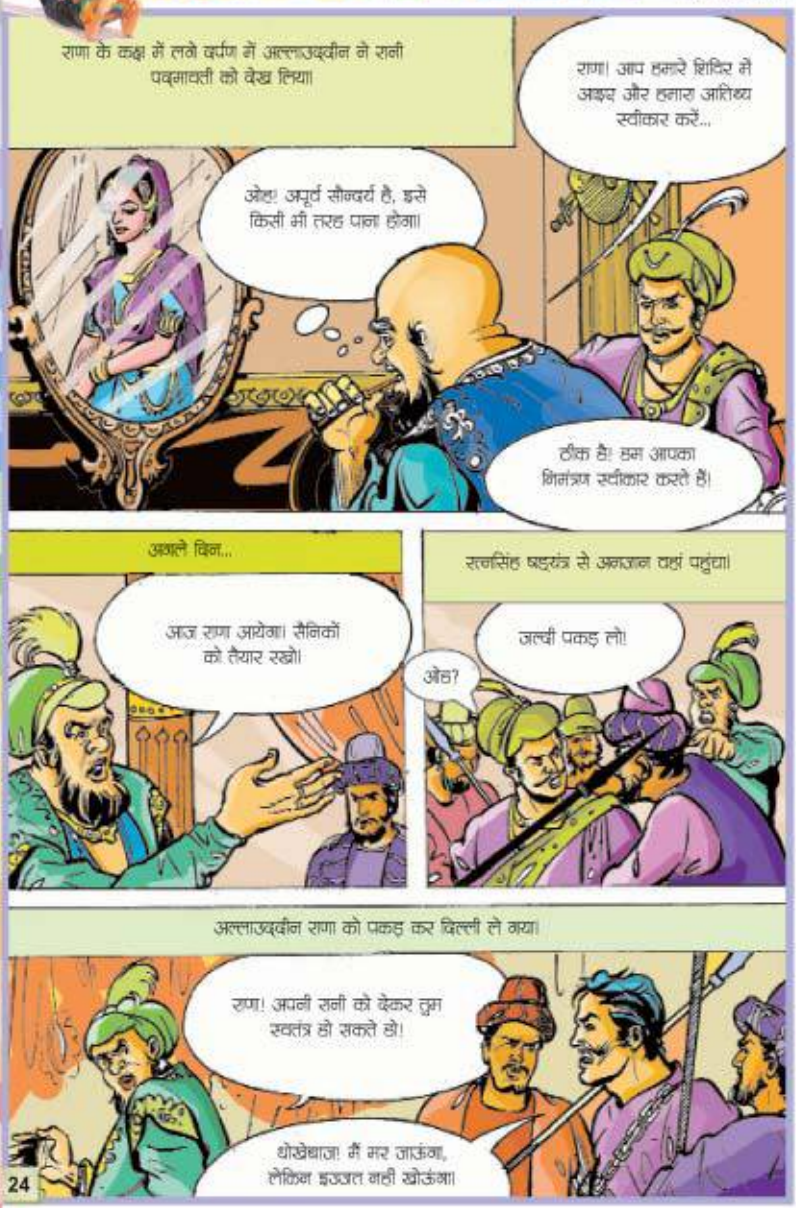
राणा के कक्ष में लगे दर्पण में अल्लाउद्दीन ने रानी पद्मावती को देख लिया।
राणा! आप हमारे शिविर में आइए और हमारा आतिथ्य स्वीकार करें...
ओह! अपूर्व सौन्दर्य है, इसे किसी भी तरह पाना होगा।
ठीक है! हम आपका निमंत्रण स्वीकार करते हैं।
अगले दिन...
आज राणा आयेगा। सैनिकों को तैयार रखो।
रत्नसिंह षड्यंत्र से अनजान वहां पहुंचा।
जल्दी पकड़ लो!
ओह?
अल्लाउद्दीन राणा को पकड़ कर दिल्ली ले गया।
राणा! अपनी रानी को देकर तुम स्वतंत्र हो सकते हो!
धोखेबाज! मैं मर जाऊंगा, लेकिन इज्जत नहीं खोऊंगा।

पद्मावती गोरा-बादल के पास पहुंची।
बेटी! तुम डरो मत, हम कोई रास्ता निकालेंगे।
मेरी इज्जत अब आपके हाथों में है! मैं मर जाना चाहती हूं।
बहना! मैं अभी जाकर उसका सिर काट लाता हूं।
गोरा ने बादल को...
...शांत किया।
हमें धोखे के जवाब में धोखा करना होगा।
राणा को छुड़ाने की उन्होंने एक योजना बनायी।
रानी का डोला कल अल्लाउद्दीन के पास जायेगा।
लेकिन उसमें उसकी मौत छुपी होगी।
गोरा ने दिल्ली एक दूत भेजा।
बादशाह! रानी आने को तैयार हैं, लेकिन पूरी शान-शौकत के साथ...इसलिए अपनी सेना को चित्तौड़ से हटा लें।
ठीक है, पद्मावती के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूं।

रानी की पालकी के साथ सेविकाओं की पालकियां भी चलीं।

गोरा अलाउद्दीन के पास पहुंचा।
बादशाह! रानी एक बार राणा को देखना चाहती हैं।
ठीक है। देखने दो...

रानी की पालकी कारागार पहुंचते ही...

महाराज हम आपके सैनिक हैं।

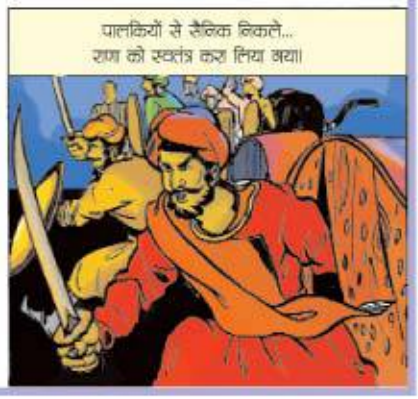
पालकियों से सैनिक निकले...
राणा को स्वतंत्र करा लिया गया।

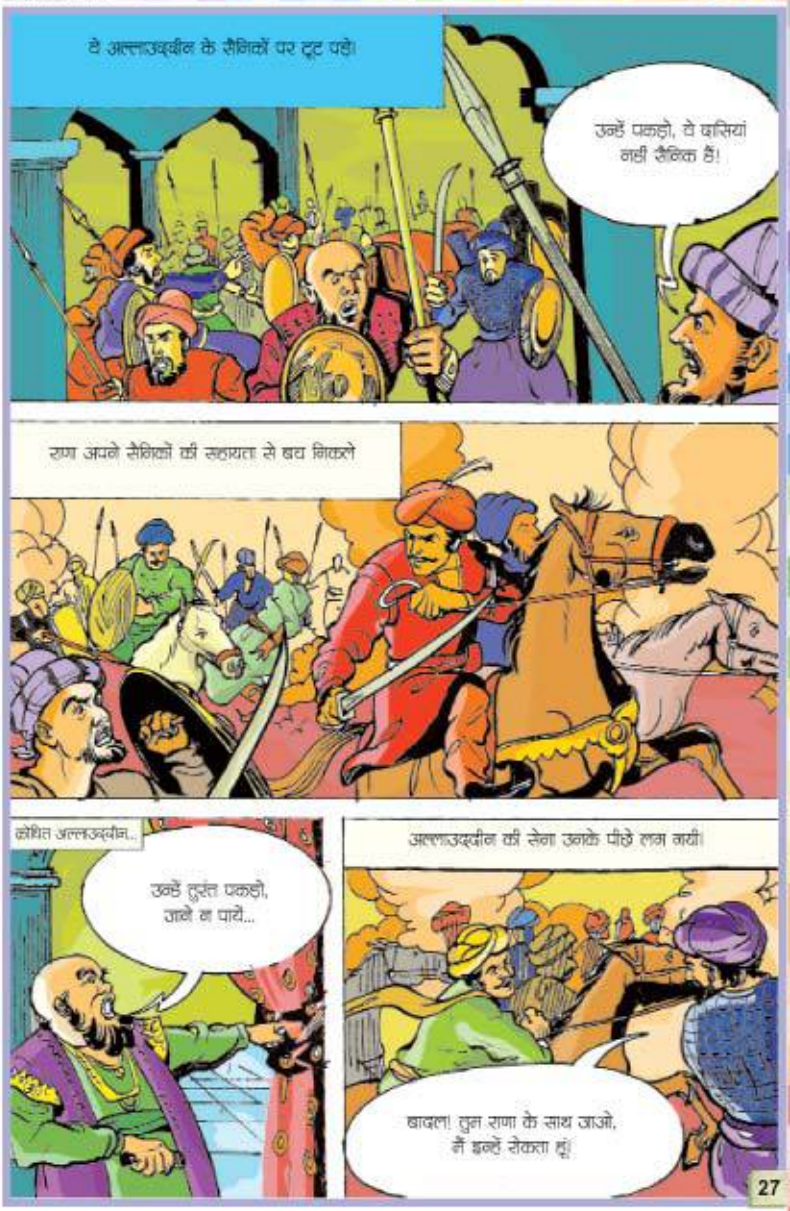
वे अल्लाउद्दीन के सैनिकों पर टूट पड़े।
उन्हें पकड़ो, वे दासियां नहीं सैनिक हैं!
राणा अपने सैनिकों की सहायता से बच निकले
क्रोधित अल्लाउद्दीन...
उन्हें तुरंत पकड़ो, जाने न पायें...
अल्लाउद्दीन की सेना उनके पीछे लग गयी।
बादल! तुम राणा के साथ जाओ, मैं इन्हें रोकता हूं।

नहीं आप जाइये, मैं इन्हें संभालता हूं।
जब तक मेरे शरीर में एक बूंद भी खून रहेगा मैं लड़ता रहूंगा।
गोरा ने प्रण लिया।
जाओ, आज्ञा का पालन करो।

दोनों सेनाएं भिड़ गयीं।

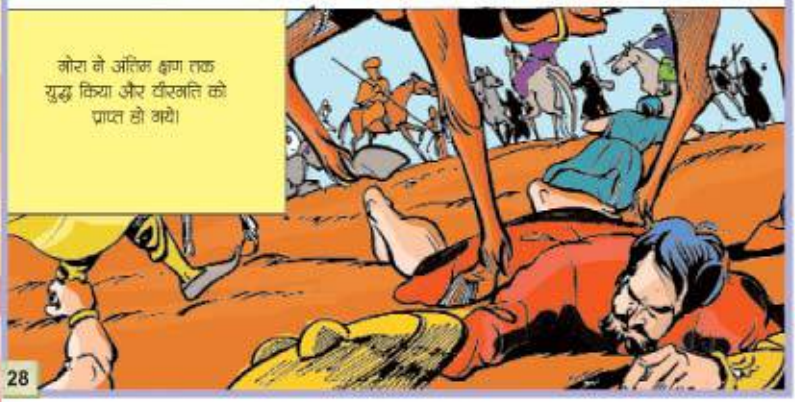
गोरा ने अंतिम क्षण तक युद्ध किया और वीरगति को प्राप्त हो गये।

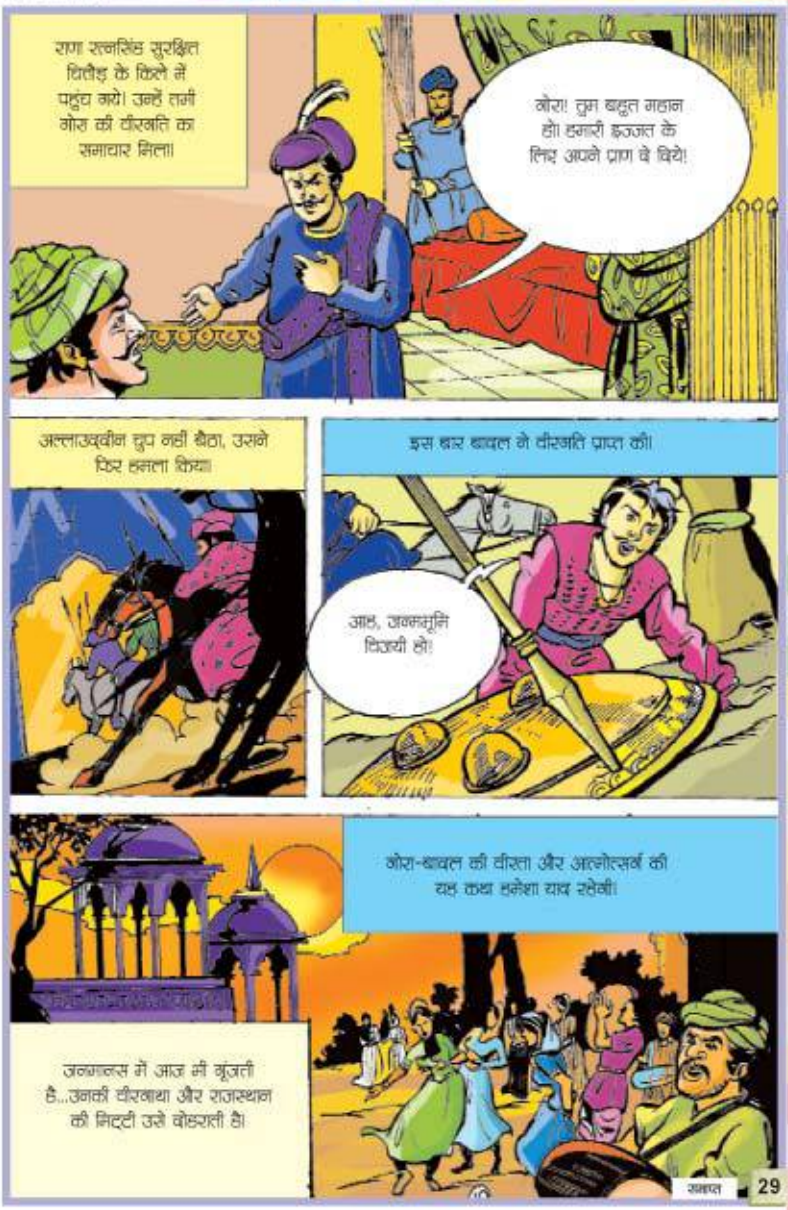
राणा रत्नसिंह सुरक्षित चित्तौड़ के किले में पहुंच गये। उनहें तभी गोरा की वीरगति का समाचार मिला।
गोरा! तुम बहुत महान हो। हमारी इज्जत के लिए अपने प्राण दे दिये!
अल्लाउद्दीन चुप नहीं बैठा, उसने फिर हमला किया।
इस बार बादल ने वीरगति प्राप्त की।
आह, जन्मभूमि विजयी हो!
गोरा-बादल की वीरता और आत्मोत्सर्ग की यह कथा हमेशा याद रहेगी।
जनमानस में आज भी गूंजती है...उनकी वीरगाथा और राजस्थान की मिट्टी उसे दोहराती है।

श्वान ने किया रक्तदान

न्यूजीलैंड में एक लैब्रोडोर नस्ल के कुत्ते ने बिल्ली को बचाने के लिए रक्त दिया। आमतौर पर कुत्ते और बिल्ली के बीच कभी सामान्य रिश्ते नहीं देखे जाते हैं, पर कुत्ते ने ऐसे समय में बिल्ली को खून दिया, जब वो लगभग मरने ही वाली थी। पशु चिकित्सक का कहना है कि बिल्ली ने गलती से चूहे मारने की दवा खा ली थी। जिससे उसकी हालत एकदम खराब हो गयी थी। बिल्ली की मालकिन किम का कहना था कि रोरी (बिल्ली) की तबियत बिल्कुल बिगड़ती ही जा रही थी। हमारे पास बिल्कुल भी वक्त नहीं था कि हम एक बिल्ली का खून लें और उसे लैब में मैच करवाकर रोरी को दें। तभी मैंने अपने दोस्त से बात की जिनके पास लैब्रोडोर प्रजाति का कुत्ता है। उसने रक्तदान किया और बिल्ली को बचाया जा सका।

बिग बुक

दुनिया की सबसे छोटे कद की महिला ज्योति आमगे ने सबसे बड़ी पुस्तक को जयपुर में जारी किया। यह पुस्तक तीस फीट लम्बी और चौबीस फीट चौड़ी है। इस पुस्तक के

लेखक जैन मुनि श्री तरुण सागर हैं। इस किताब का वजन दो हजार किलोग्राम है। इस पुस्तक को अहमदाबाद और नासिक के दस कर्मचारियों ने तैयार किया। उन्होंने करीब ७.४ किलोग्राम लोहा, ४ लीटर रंग और ६ किलोग्राम पटसन की मदद से चार दिन में यह किताब तैयार की।

बोलने वाला पेन

यह पेन बोलता है। अंग्रेजी उच्चारण साफ करने में उपयोगी यह पेन बच्चे ही नहीं, बड़ों को भी लुभा रहा है। इस पेन की खासियत है कि इसे लिखे हुए शब्द पर रोल करने पर यह बोलता है। यह अंग्रेजी भाषा का सही उच्चारण सिखाता है। पेन बैटरी-चालित है।

दरअसल यह पेन सेंसर बेस्ड है। जो खास तरह से तैयार किताबों पर लिखे अक्षरों के पिक्सल और टेक्स्ट के संपर्क में आते ही उसे रीड करने लगती है और सेंसर उसे ऑडियो कोड में कन्वर्ट करता है। इसमें लगे छोटे-छोटे स्पीकर के माध्यम से उन शब्दों को सुन जा सकता है। इस पेन में माइक, यूएसबी चार्जर, स्पीकर, हेडफोन, कार्ड रीडर, पावर बटन और वॉल्यूम सिस्टम लगे हैं।

दमदार दांत

चीन के तीस वर्षीय ली होंग्शिओं ने एक अनोखा विश्व कीर्तिमान बनाया है। पेशे से स्टंटमैन, लो ने लकड़ी की बनी हुई छह बेंचों को अपने दांतों से छह सेकंड तक साधकर उपस्थित जनसमुदाय को अचंभित कर दिया। प्रत्येक बेंच एक मीटर लंबी, छ- सेंटीमीटर ऊंची और तीन किलो वजनी थी।

गिनीज रिकॉर्ड्स

ब्रिटेन में एक ऐसे घोड़े का जन्म हुआ है, जिसका वजन 2.7 किलोग्राम है और ऊंचाई केवल 14 इंच। जी हां, केवल 14 इंच के इस नर घोड़े का नाम 'आइरटाइन' रखा गया है। न्यू हैम्पशायर के हार्नस्टीड में जन्म के समय इस घोड़े का वजन 2.7 किलोग्राम दर्ज किया गया था।

लॉस वेगास की 45 वर्षीय क्रिस्टीन वॉल्टन के नाखून दुनिया में सबसे लंबे पाए गए हैं। क्रिस्टीन के बाये हाथ की अंगुलियों के नाखून 10 फीट 2 इंच के हैं, जबकि दाए हाथ में नाखूनों की लंबाई 9 फीट 7 इंच है।

दुनिया में पहला रेसिंग ट्रैक सन् 1907 में लंदन के ब्रूकलैंड सरी में बनाया गया था।

बाली

बाली विश्व के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से एक है। बाली जावा द्वीप एवं लो□बोक नदी के पास स्थित है। बाली कला, नृत्य, प्रतिमा, चित्र, संगीत के लिए पर्यटकों में लोकप्रिय है। इसकी प्राकृतिक सुंदरता भी अद्भुत है। यहां के ऐतिहासिक महलों एवं मंदिरों को देखकर पर्यटक विस्मित रह जाते हैं कि इतने वर्षों बाद भी यहां के महल-मंदिर अभी जीवंत हैं।

बाली में विभिन्न धर्म के लोग रहते हैं। यहां के बीच पर्यटकों को बहुत लुभाते हैं। सफेद रेत पर टहलना एवं समुद्र का आनंद उठाना पर्यटकों को बहुत रास आता है। इसके अलावा पर्यटक कई प्रकार की जल क्रीड़ा का आनंद उठाते हैं।

सैर सपाटा

पर्यटकों को आप यहां गोताखोरी, सर्फिंग एवं स्नोरकलिंग (सांस लेने के उपकरण से सांस लेकर गोताखोरी करना) करते देख सकते हैं। यहां सैलानी कई प्रकार की जल क्रीड़ाओं के साथ-साथ समुद्र पर पैरासेलिंग कर सकते हैं। यहां कई प्रकार की कलात्मक वस्तुएं पाई जाती हैं। भिन्न प्रकार के रंग-बिरंगे आधुनिक कपड़े मिलते हैं। और कई ऐसी दुकानें हैं, जहां पर प्राचीन वस्तुएं मिल जाती हैं। आसपास का वातावरण बहुत ही शांत है।

ठीर समुद्र तट पर स्थित एक गांव है, तुलांबेन। यह अगंग पहाड़ पर स्थित है। इस गांव में प्रसिद्ध स्थल है, लिबर्टी रेक साइट। यहां गोताखोर स्कूबा डाइविंग (समुद्र के तल में गोता) लगाते हैं। पर्यटक पहाड़ गुनुंग अगुंग एवं सेराया पर चढ़कर झरने एवं वहां की प्राकृतिक सुंदरता का आनंद उठाते हैं। रंग-बिरंगे फूल शीतल हवा में खिलते मनमोहक दिखते हैं। लेस नगर के पास मन को भाव-विभोर कर देने वाला खूबसूरत झरना बहता है। अमलापुरा महल एवं तीर्थ गंगा तुलांबेन के प्रसिद्ध महलों में से एक है।

यहां पर पर्यटकों के मनोरंजन के लिए कई तरह के समारोह आयोजित किए जाते हैं। साथ ही यहां कई प्रकार के रेस्तरां भी हैं। संगीत समारोह, आधुनिक नृत्य समारोह आयोजित किया जाता है। यहां की शाम बहुत लुभावनी होती है। चारों तरफ उजाले में लोग भिन्न प्रकार की चीजें खरीदते हैं

Prayer is simply a two-way conversation between you and God.
Prayer: the key of the day and the lock of the night.

21वीं सदी का विचार

जिसकी **Help** कोई नहीं करता,
उसकी **Help** Google करता है...

बेटे के घर देर से आने पर.....

माँ: कहाँ था अभी तक ?
बेटा: EMOTIONAL किस देखने गया था

"प्यारी माँ"

माँ: अगर तेरे पास इसका कोई हो तो अब भी दिखाऊँ ACTION किस

"ज़ालिम बाप"

संता का सिर फट गया!

संता: ये कैसे हुआ?

संता:-
मैं चमाल से पाकर गिर रहा था, मुझे एक आदमी ने बोला "नहीं छोड़ो" बस मैं इतमाल कर लिया कहाँ!

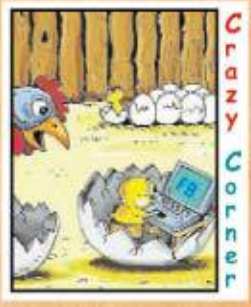
Crazy Corner

QUOTES

Three things in life you should never lose ,

HOPE
PEACE
HONESTY

"Our prime purpose in this life is to help others. And if you can't help them, at least don't hurt them."

Don't trust too much
Don't love too much
Don't hope too much
Because that "too much"
Can hurt you so much.

Never reply when you are angry.
Never make a promise when you are happy.
Never make a decision when you are sad.

hope for the best
expect the worst
and take what comes.

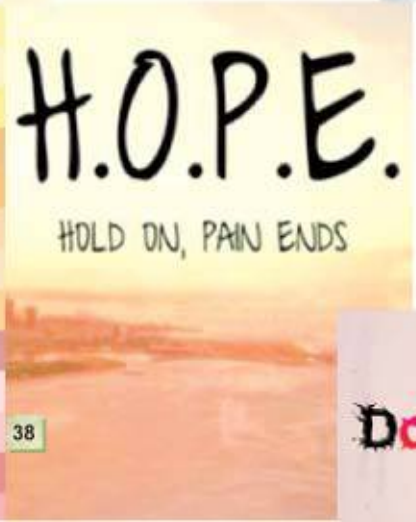

बच्चो, तुम्हें रोजाना अपने घर-स्कूल में अंग्रेजी बोलना चाहिए। इससे अंग्रेजी पर अच्छी पकड़ तो बनेगी ही, साथ ही तुम्हारी अंग्रेजी बोलने में होने वाली हिचकिचाहट भी दूर होगी और कॉन्फिडेंस भी बढ़ेगा। यहां तुम्हें रोजाना घर-बाहर बातचीत में काम में आने वाले वाक्य दिए जा रहे हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और

क. क्या आप यहां पहले भी आए हैं?
Have you been here before?
हैव यू बीन हिअर बिफोर?

ख. क्या आप नाचना चाहेंगी?
Would you like to dance?
वुड यू लाइक टु डांस?

ग. मेरे साथ कॉफी पीना चाहोगे?
Would you like to join me for a coffee?
वुड यू लाइक टु जॉइन मी फॉर अ कॉफी?

घ. आप कुछ खाना चाहेंगी?
Do you fancy getting a bite to eat?
डू यू फैंसी गेटिंग अ बाइट टु ईट?

ङ. आप कभी दोपहर का भोजन साथ करना चाहेंगी?
Do you fancy lunch sometime?
डू यू फैंसी लंच समटाइम?

च. यह मेरा नंबर है
Here's my number.
हियर्स माई नंबर।

छ. आपका फोन नंबर क्या है?
What's your phone number?
व्हाट्स योअर फोन नंबर?

ज. क्या मैं आपका फोन नंबर ले सकता हूं?
Could I take your phone number?
कुड आई टेक योअर फोन नंबर?

झ. आप आज बहुत अच्छे लग रहे हैं।
You look very nice today.
यू लुक वैरी नाइस टुडे।

ञ. मुझे आपकी पोशाक पसंद है।
I like your outfit.
आई लाइक योअर आउट फिट।

Antonyms

Slow- धीरे	Fast- तेज
Slim- पतला	Fat- मोटा
Small- छोटा	Big- बड़ा
Solid- ठोस	Liquid- तरल
Smooth- कोमल	Rough- खुरदरा

Word-Power

- Reduction — छूट
- Republican — प्रजातंत्रवादी
- Supported — समर्थित
- Excellence — उत्कृष्टता
- Robbery — डकैती
- Applause — वाहवाही

English-Hindi Phrases

By goods train- मालगाड़ी से।

By authority of- के अधिकार से।

By any means- किसी भी प्रकार से।

By command (of)- के समादेश से।

By dishonest means- बेईमानी से।

By all means- निस्सन्देह, अवश्यमेव।

Synonyms

Strong- सुदृढ़, प्रबल, मजबूत

Firm, Hard, Potent, Stiff, Solid, Substantial, Inviolable.

(अगले अंक में जारी)

जब पिंकू पैदा हुआ तो संता डॉक्टर से सलाह लेने गया कि बच्चों की देखभाल कैसे की जाए।
डॉक्टर- बच्चे को पानी देने से पहले उबाल लेना चाहिए।
संता- लेकिन डॉक्टर साहब, उबालने से बच्चा जल नहीं जाएगा!

संता और बंता मिस के म्युजियम में ममी को देख रहे थे।
बन्ता- बोकरा! पट्टियां ही पट्टियां बंधी हैं...
कितनी चोटें लगी हैं इसको...
जरूर ट्रक से एक्सीडेंट में मरा होगा...
बन्ता- हां, ट्रक का नंबर भी लिखा है- एच.डी. 1460

नेताओं से भरी एक बस जा रही थी। अचानक बस रोड छोड़ कर नीचे खेत में एक पेड़ से जा टकराई। एक बूढ़ा किसान जिसका वह खेत था दौड़ता हुआ आया। सब कुछ देख उसने एक गड्ढा खोदना शुरू किया और फिर उसमें नेताओं को दफना दिया।
कुछ दिन बाद स्थानीय प्रशासन को बस के एक्सीडेंट के बारे में पता लगा, उन्होंने किसान से पूछा कि सारे नेता कहां गये।
किसान ने बताया कि उसने सभी को दफना दिया है...
'क्या सभी मर गये थे?' आश्चर्यचकित होकर पूछा।
किसान ने बताया- 'नहीं। कुछ कह रहे थे कि वो नहीं मरे। पर आप तो जानते ही हैं कि ये नेता झूठ कितना बोलते हैं...

दोपहर के समय संता ने एक कुत्ते को अपनी कार के नीचे सोते देखा...
तो कुत्ते को बाहर खींचकर निकालते हुए चिल्लाया- बाहर निकल, बड़ा आया कार के नीचे घुसने वाला। क्या खुद को मैकेनिकल इंजीनियर समझ रहा है?

एक आदमी बड़े ही अजीब तरीके से छींक रहा था। बगल में बैठे सज्जन ने उससे कहा...
आप एक बार कारगिल से छींक क्यों नहीं लेते...?
साहब, कैसे छींकू...
मेरी बीवी ने कहा था कि जब छींक आए तो समझना कि मैं तुम्हें अपने पास बुलाने वाली हूं...
सज्जन- तो इसमें दिक्कत क्या है...?
साहब- क्या बताऊं...
दरअसल, मेरी बीवी को मरे दो साल हो गए हैं और मैं मरकर उसके पास नहीं जाना चाहता...

एक नई बहू ने दही मथा। उस पर मक्खन आ गया।
बहू सास से बोली- अम्मा जी मक्खन आ गया है। इसे कहां रखूं?
सास बोली- यह नाम कभी मत लेना। यह तुम्हारे ससुर का नाम था।
अगले दिन बहू ने फिर दही मथा और उस पर फिर मक्खन आ गया।
बहू बोली- अम्मा जी, ससुर जी आ गए हैं। इन्हें कहां रखूं?

एक डॉक्टर एक आदमी के पीछे भाग रहा था। रास्ते में डॉक्टर के किसी पहचान वाले ने पूछा- क्या हुआ डॉक्टर साहब, उसके पीछे क्यों भाग रहे हो ?
हांफते हुए डॉक्टर साहब बोले- चार बार ऐसा हो चुका है। यह मरीज विमान का ऑपरेशन कराने आता है और माल कटवाकर चला जाता है।

विमान यात्रा में एक युवक के साथ वाली सीट पर एक युवती बैठी हुई थी।
युवक उससे बात करने को आतुर था। पर समझ नहीं पा रहा था कि बातचीत कैसे शुरू करे।
आखिर उसने गला साफ करते हुए युवती से पूछ ही लिया- एक्सक्यूज मी, क्या आप भी इसी विमान से यात्रा कर रही हैं?

कल का काम आज मत करो, उसको कल तक रखो... क्या पता उस काम को करने की जरूरत ही न पड़े...

खुशी वो चीज है जिस से गम भुलाया जाता है... और गम वो चीज है दोस्तो, जिससे लिफाफा चिपकाया जाता है...

संता बाजार जा रहा था, अचानक एक लड़की उससे टकरायी और मुस्कराते हुए बोली- आइ एम सॉरी।
संता खुश होते हुए बोला- आइ एम संता शर्मा। आपसे मिलकर खुशी हुई मिस सॉरी।

पत्नी-जब तुम चश्मा उतारते हो तो बहुत हैंडसम लगते हो।
पति- जब मैं चश्मा उतारता हूं ना तो तुम भी मुझे खूबसूरत दिखती हो...।

संता ऊंचे पहाड़ पर बैठकर पढ़ाई कर रहा था।
बंता-ऊपर क्या कर रहे हो?
संता- हायर स्टडीज...

बंटू ने अपने घर में एसी लगवाया। अगले दिन चिंटू उसके घर आया और एसी को देख कर बोला...
चिंटू- यार बंटू, अभी तो सर्दी का मौसम है फिर एसी लगवाने का क्या फायदा?
बंटू- अरे मौंदू, सर्दी का सीजन है तो क्या हुआ, मैंने एसी उल्टा लगवाया है। गरम हवा अन्दर और ठंडी हवा बाहर।

संता किताब की दुकान पर पेन लेने जाता है।
संता- एक ब्लैक बॉलपेन देना।
दुकानदार- यह लो, यह पेन खूब चलेगा।
संता- अरे, मुझे चलने वाला नहीं लिखने वाला पेन चाहिए।

दो बच्चों की मां तीसरी बार शादी कर रही थी।
फेरों के वक्त छोटा बच्चा रोने लगा। बहुत कोशिश की पर उसका रोना बंद नहीं हुआ। तंग आकर मां बोली- चुप हो जा, वरना अगली शादी मैं लेकर नहीं जाऊंगी।

पत्नी-जमाना कितना बदल गया है।
पति- वो तो है... लेकिन आज अचानक क्यों याद आया।
पत्नी- हमारे समय में मां से कहते थे कि जींस पहननी है तो वह कहती थी कि लोग क्या कहेंगे। और आज हमारी बेटी कहती है कि मिनी स्कर्ट पहननी है तो हम कहते हैं कि बेटा पहन ले...कुछ तो पहन ले...

पिता बेटे से- तुम्हारा पेपर कैसा रहा?
बेटा- बस पहला सवाल छूट गया।
पिता- अच्छा और बाकी?
बेटा- तीसरा मुझे आता नहीं था, चौथे नंबर का मैं करना भूल गया। पांचवां मुझे नजर नहीं आया और छठा सवाल पीछे था, इसलिए मैं देख नहीं पाया।
पिता गुस्से में- और दूसरा सवाल?
बेटा- सिर्फ वो ही गलत हुआ।

संता एक ज्योतिषी के पास कुंडली दिखाने गया।
ज्योतिषी- तेरा नाम संता है?
संता- क्या बात है महाराज!
ज्योतिषी- तुझे एक लड़का और एक लड़की है?
संता- जी महाराज।
ज्योतिषी- तू ने अभी 15 किलो गेहूं खरीदे हैं?
संता- हां, महात्मा जी आप तो अंतर्यामी हो।
ज्योतिषी- मूर्ख अगली बार आना तो कुंडली लाना, राशन कार्ड नहीं।

संता- तुझे पुलिस ने क्यों पकड़ा?
बंता- मैले पचास के खुल्ले चिट्टे थे।
संता- तो इसमें क्या गलत है?
बंता- वो मैंने 23-25 रुपए के दो नोट दिए थे ना।

एलिफेंटा की गुफाएं

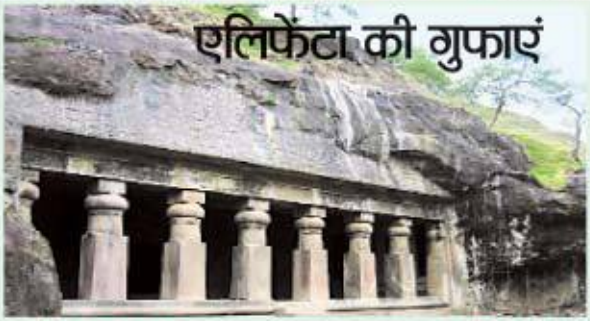

दोस्तो, एलिफेंटा को घारापुरी के पुराने नाम से जाना जाता है जो कोंकणी मौर्य की द्वीप राजधानी थी। यह तीन शीर्ष वाली महेश मूर्ति की भव्य छवि के लिए जाना जाता है। जिनमें से प्रत्येक एक अलग रूप दर्शाता है। एलिफेंटा की गुफाएं मुंबई महानगर के पास स्थित पर्यटकों का एक बड़ा आकर्षण केन्द्र हैं। गुफा में बना मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। जिसे राष्ट्र कूट राजाओं द्वारा लगभग त वीं शताब्दी के आस-पास खोज कर निकाला गया था। जिन्होंने ए.डी. खभ्ख - -खप के बीच इस क्षेत्र पर राज्य किया।

एलिफेंटा की गुफाएं सात गुफाओं का संग्रहण हैं, जिनमें से सबसे महत्वपूर्ण है महेश मूर्ति गुफा। गुफा के मुख्य हिस्से में पोर्टिकों के अलावा तीन ओर से खुले सिरे हैं और इसके पिछली ओर ख्ख मीटर का चौकोर स्थान है। इसे म खंभों की कतार से सहारा दिया जाता है। द्वारपाल की विशाल मूर्तियां अत्यन्त प्रभावशाली हैं। इस गुफा में शिल्पकला के कक्षों में अर्धनारीश्वर, कल्याण सुंदर शिव, रावण द्वारा कैलाश पर्वत को ले जाने, अंधकारी मूर्ति और नटराज शिव की उल्लेखनीय छवियां दिखाई गई हैं। इस गुफा संकुल को यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत का दर्जा दिया गया है।

छत्रपति शिवाजी टर्मिनस

मुंबई में छत्रपति शिवाजी टर्मिनस को पहले विक्टोरिया टर्मिनस के नाम से जाना जाता था। यह भारतीय पारंपरिक वास्तुकला से ली गई विषय वस्तुओं के मिश्रण सहित भारत में विक्टोरियन गोथिक पुन: जीवित वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह टर्मिनस इन दोनों संस्कृतियों के बीच प्रभावों के महत्वपूर्ण आपसी बदलाव को दर्शाता है। इस भवन को ब्रिटिश वास्तुकार एफ. डब्ल्यू. स्टीवेंस ने डिजाइन किया था। यह भवन मुंबई की पहचान बन गया।

इस टर्मिनस का निर्माण वर्ष क्ख्त में आरंभ करते हुए दस वर्षों में किया गया, जो मध्यकालीन इटालियन मॉडल पर आधारित हाई विक्टोरियन गोथिक डिजाइन के अनुसार है। इसके पत्थर के गुंबद, कंगूरे, नोकदार आर्च और संकेन्द्रित भूमि योजना पारंपरिक भारतीय महलों की वास्तुकला के नजदीक है।

यह प्रसिद्ध टर्मिनल ब्रिटिश राष्ट्रमंडल में क वीं शताब्दी के अंत की ओर रेलवे वास्तुकला की सुंदरता को भी दर्शाता है, जिसे उन्नत संरचनात्मक और तकनीकी समाधानों द्वारा पहचाना जाता है। यह मुंबई के लोगों का एक अविभाज्य अंग है, क्योंकि यह स्टेशन उप शहरी और लंबी दूरी रेलों का स्टेशन है।

यह भव्य टर्मिनस भारत में मध्य रेलवे का मुख्यालय है। साथ ही राष्ट्र के व्यस्ततम स्टेशनों में से एक है। वर्ष क—म से इसे विक्टोरिया टर्मिनल के नाम से जाना जाता था, जो इसे महारानी विक्टोरिया के सम्मान में दिया गया था। दो जुलाई ख्ब को यूनेस्को की विश्व विरासत समिति ने इस क वीं

फतेहपुर सीकरी

फतेहपुर सीकरी का शाही शहर आगरा से पश्चिम दिशा में छ□बीस मील की दूरी पर स्थित है। इसका निर्माण महान मुगल शासक अकबर द्वारा कराया गया था। संत शेख सलीम चिश्ती के स□मान में सम्राट अकबर ने सीकरी ब्रिज पर इस विशाल शहर की नींव रखी थी। वर्ष क्ष्ख्ख में उन्होंने स्वयं अपने उपयोग के लिए भवन निर्माण का आदेश दिया और अपने दरबार के विशिष्ट व्यि□तयों से अपने घर यहां निर्मित करने के लिए कहा।

एक वर्ष के अंदर अधिकांश निर्माण कार्य पूरा हो गया और अगले कुछ वर्षों के अंदर सुयोजना बद्ध प्रशासनिक, आवासीय और धार्मिक भवन अस्तित्व में आए।

जामी मस्जिद संभवतया पहला भवन था, जो निर्मित किया गया। इसके शिलालेख एडी क्ष्ख्ख-ख्ख दर्शाते हैं कि इसका निर्माण इस तिथि को पूरा हुआ। बुलंद दरवाजा लगभग ९ वर्ष बाद जोड़ा गया। अन्य महत्□वपूर्ण भवनों में शेख सलीम चिश्ती की दरगाह, नौबत-उर-न□कारखाना (ड्रम हाउस), टकसाल (मिंट), कारखाना खजाना, हकीम का घर, दीवान-ए-आम (जनता के लोगों के लिए बनाया गया कक्ष), मरियम का निवास, जिसे सुनहरा मकान (गोल्डन हाउस) सहित जोधा बाई का महल, बीरबल का

रोमानिया

दुनिया के देश

द्वितीय विश्वयुद्ध में रोमानिया जर्मनी के साथ रहा। जर्मनी की हार के बाद यहां सोवियत संघ का अधिकार हो गया। वर्ष क-ख्ख में आजादी के बाद यहां राजतंत्र समाप्त हो गया। वर्ष क-क में यहां नया संविधान लागू किया गया।

आधिकारिक नाम- रोमानिया। **राजधानी**- बुखारेस्ट। **मुद्रा**- ल्यू।

मानक समय- जी एम टी से ख घंटे आगे। **भाषा**- रोमानियन (आधिकारिक)। **कुल जनसं□या**- ख्ख्ख्ख-,-ख्ख

क्षेत्रफल- ख्फ्ख,९ वर्ग किलोमीटर। **स्थिति**- दक्षिण पूर्वी यूरोप में बुल्गारिया व उक्रेन के मध्य काला सागर के तट पर स्थित है।

जलवायु- महाद्वीपीय, मध्य में कारपेथियन पर्वत श्रृंखला स्थित है। यहां झीलें और वन बहुतायत में हैं।

प्रमुख नदियां- दानुबे, □नूरस, प्रुट।

सर्वोच्च शिखर- माल्देबियानु- ख्भ्ब्ब मीटर।

प्रमुख बड़े शहर- क्लोज, बुखारेस्ट, तिमिसोआरा, कॉन्सटेन्टा। **निर्यात**- जूते, वस्त्र, धात्विक उत्पाद, लकड़ी उत्पाद, भोज्य पदार्थ।

आयात- मशीनरी, उपभो□ता सामग्री, ईंधन, खनिज।

प्रमुख व्यापार सहयोगी देश- ड□ीरी अमरीका, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस। **प्रमुख उद्योग**- इस्पात, रासायनिक उर्वरक, तेल, सीमेंट, चीनी, मोटर वाहन, विद्युत उपकरण।

प्रमुख फसलें- गेहूं, जौ, जई, म□का, रे, चुकंदर, सूरजमुखी। **प्रमुख खनिज**- कोयला, लवण, ब्□ाइट, क्रोमियम, मैग्नेसाइट।

शासन प्रणाली- गणतंत्रात्मक। **संसद**- नेशनल असेंबली। **राष्ट्रीय ध्वज**- लाल, पीली व नीली पट्टियों पर आधारित।

स्वतंत्रता दिवस- - मई, क्ख्ख्ख **प्रमुख धर्म**- ईसाई।

प्रमुख हवाई अड्डे- बुखारेस्ट स्थित बनेसा व ओटोपेनी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे।

प्रमुख बंदरगाह- कॉन्सटेंटा, ब्राइला, दक्षिण एगिमिया, गालाटी।

इंटरनेट कोड- .ro

तथ्य निराले

कुंग फू मूलतः एक बोधिधर्म नाम के बौद्ध भिक्षु के द्वारा विकसित किया गया था, जो 500 ईस्वी के आसपास भारत से चीन गए।

इटली की प्रसिद्ध कॉफी, कैफे लैट्टे में एक भाग एस्प्रेसो और तीन भाग गर्म दूध का मिश्रण होता है।

ब्रिटिश राज से पहले तक भारत विश्व का सबसे समृद्ध राष्ट्र था। इसे सोने की चिड़िया कहा जाता था।

संसार का प्रथम विश्वविद्यालय 700 ईस्वी पूर्व तक्षशिला में स्थापित किया गया था। तत्पश्चात चौथी शताब्दी में नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की गई।

5000 वर्ष पूर्व जब अन्य संस्कृतियां वानरावस्था व वनवासी जीवन जी रहे थे। तब भारतीयों ने सिंधु घाटी की सभ्यता में हड़प्पा संस्कृति की स्थापना की।

आधुनिक भवन निर्माण पुरातन भारतीय वास्तु शास्त्र से प्रेरित है।

सिक्ख, बौद्ध, जैन का सिख धर्मों का उदय भारत में हुआ।

महात्मा बुद्ध ने 500 ईस्वी पूर्व बनारस की यात्रा की थी। बनारस विश्व का एकमात्र ऐसा प्राचीन नगर है, जो आज भी अस्तित्व में है।

प्राचीन काल की द्वारिका नगरी जो कृष्ण की नगरी के नाम से जानी जाती है, अब समुद्र में डूब चुकी है।

नचिकेता और यम के बीच की बातचीत एक उपनिषद में है, जिसका नाम कठोपनिषद है।

भारत के प्रमुख ग्रंथ भगवत गीता को विदेशी विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता है।

विटामिन की खोज फंक ने वर्ष 1911 ईस्वी में किया था।

महर्षि सुश्रुत सर्जरी के आविष्कारक माने जाते हैं। करीब 2600 साल पहले उन्होंने अपने समय के स्वास्थ्य वैज्ञानिकों के साथ प्रसव, मोतियाबिंद, कृत्रिम अंग लगाना, पथरी का इलाज और प्लास्टिक सर्जरी जैसी कई तरह की जटिल शल्य चिकित्सा के सिद्धांत प्रतिपादित किए।

वाराणसी अथवा बनारस दुनिया के सबसे प्राचीन नगरों में से एक है।

हिमालय से तीन गुणा ऊंचा पर्वत मंगल ग्रह पर मिलता ओलम्पिया है।

सामान्यतः तीन मिनट का समय मामूली समझा जाता है, परंतु किसी दुर्घटना के समय इन तीन मिनटों का बहुत महत्व होता है। यदि दुर्घटनावश किसी व्यक्ति के दिल की धड़कन बंद हो जाए तो उसे तीन मिनट के भीतर फिर से आरंभ करना आवश्यक होता है। यदि तीन मिनट तक मस्तिष्क में रक्त नहीं पहुंच पाता है तो ऐसी विकृतियां उत्पन्न हो सकती हैं, जिन्हें मनुष्य के स्वस्थ होने के बावजूद सुधारा नहीं जा सकता भले ही उसकी जान सलामत रहे।

लंदन के टॉवर ब्रिज पर कोई भी ऐसा व्यक्ति जो गुलाम नहीं है। वह भेड़ ले जा सकता है। वह भी बिना टैक्स चुकाए।

दिल्ली खांड उत्तराखण्ड में है।

पुराणों की संख्या 18 है।

पाकिस्तान के गेंदबाज वसीम अकरम बल्ले और टेस्ट में हैट्रिक बनाने वाले पहले गेंदबाज हैं।

फ्रांस में किसी भी सुअर का नाम नेपोलियन नहीं रखा जा सकता।

विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद को दस खंडों में बांटा गया है।

खो-खो में नौ खिलाड़ी होते हैं।

गुलाबों का युद्ध इंग्लैण्ड में हुआ।

हिंदुओं के चार पवित्र मठों की स्थापना आदि गुरु शंकराचार्य ने करवाई थी।

सिकुड़ते हैं अंगुलियों के अग्रपौर

आपने अक्सर देखा या अनुभव किया होगा कि जब हमारे हाथ पानी के सम्पर्क में लम्बे समय तक रहते हैं तो अंगुलियों के अग्र-पौरों पर सिकुड़न आ जाती है। लेकिन शरीर के दूसरे भागों पर भी पानी इसी तरह प्रतिक्रिया करता हो, ऐसा नहीं होता। इसका एक खास कारण है कि अंगुलियों के अग्रभाग पर सामने की ओर त्वचा के ऊपर इसकी सूखी हुई मृताप्रायः कोशिकाओं की एक मोटी-सी अतिरिक्त परत और लगी रहती है, जो पानी को अपने अंदर सोख लेती है।

पानी के सम्पर्क में लम्बे समय तक रहने पर यह सूखी त्वचा इतना पानी सोख लेती है, जिससे यह फूल जाती है। चूंकि इस परत में कोशिकाएं बहुत सुव्यवस्थित और क्रमबद्ध तरीके से नहीं सजी होती हैं, इसलिए इनके फूलने पर स्वाभाविक रूप से इनमें सिकुड़न पड़ जाती है। इसके ठीक विपरीत हाथों के सूख जाने पर जब त्वचा में मौजूद इस अतिरिक्त पानी का वाष्पीकरण हो जाता है तो ये सिकुड़न स्वतः ही गायब हो जाती है।

शरीर के दूसरे भागों पर भी पानी की यही प्रतिक्रिया इसलिए नहीं होती, क्योंकि दूसरे लगभग सभी भागों पर पुरानी सूखी कोशिकाओं की परत बहुत पतली-सी होती है और चूंकि वैसे में यह बहुत थोड़ा पानी सोख पाती है। इसलिए इन भागों पर सिकुड़न न के बराबर ही होती है।

जादुई चित्रकारी मोतियों वाली

सामग्री– काई बोर्ड का एक हिस्सा (आकार लगभग 25 बुग 25 बुग 25 सेंटीमीटर), प्लास्टिक के मोती, गोंद, काला कपड़ा, चॉक।

पहले ये तैयारी करो– काले कपड़े से वो बड़े आकार के रूमाल तैयार कर लो। फिर इनमें से एक पर चॉक से चित्र बनाकर गोंद या किसी भी चिपकाने वाले पदार्थ से इस पर रंग-बिरंगे मोती चिपकाओ। काई बोर्ड के छत्तरे पर भी रंगीन कागज चिपकाकर तुम इसे जितना आकर्षक बना सकते हो, बना लो। इसके बाद मोती लगे रूमाल को अच्छी तरह तहा लो। हां, ध्यान रखना कि मोती अंदर की तरफ रहें और इसे मेज पर रखकर इसके ऊपर हिस्सा उलटा करके ढक दो। हिस्से के आगे दर्शकों की ओर दूसरी रूमाल तहकर रखो और साथ ही रंग-बिरंगे मोतियों का बर्तन।

शुरू करो– हिस्से के आगे रखे रूमाल को उठाकर अच्छी तरह झाड़ो और फिर कोनों से पकड़कर फैलाते हुए इसे दर्शकों को दोनों से दिखा दो। अब इस रूमाल को बिना तहाए ही हिस्से के आगे रखो, ताकि हिस्से को उठाने पर इसके नीचे तहकर रखा दूसरा रूमाल दर्शकों को सीधे नजर न आये। इसके बाद एक हाथ से हिस्सा उठाकर इसके अन्दरूनी भाग को दर्शकों के सामने करते हुए उन्हें पूरी तरह विश्वास दिला दो कि हिस्से में कुछ नहीं है। साथ ही दूसरे हाथ से दोनों रूमालों को इस तरह एक साथ समेटकर उठा लो ताकि मोतियों वाला रूमाल सादे रूमाल के पीछे ही छिपा रहे। हिस्सा मेज पर रखो और रूमालों को इस हिस्से के अंदर डाल दो। पर यह ध्यान जरूर रखना कि मोतियों वाला रूमाल कौनसा है।

हां, जादू के मंतर बोलते हुए जैसे ही तुम मोतियों से मुट्ठीभर इन्हें हिस्से के अंदर छिड़कोगे, दर्शक कुछ अनहोनी देखने के लिए सचेत हो जाएंगे। वे हैरत में पड़ जाएंगे, जब तुम मोतियों वाले रूमाल को झाड़ते हुए (ताकि उस पर गिरे मोती हिस्से में ही रह जाएं) उसे अपने दर्शकों के सामने एक झण्डे की तरफ फहरा दोगे।

–आइवर

CrossWord Puzzles

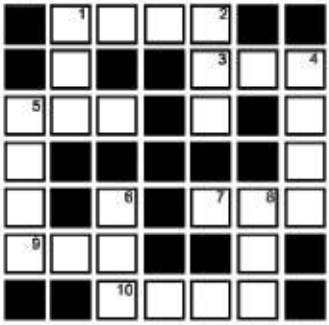

बाएं से दाएं

क. सहसा, हठात, एकाएक को यह भी कहते हैं (5)।
4. ताश के खेल में कुल...पत्ते होते हैं (4)।
5. सुकुमार या नाजुक का मतलब यह भी होता है (4)।
ख. भगवान कृष्ण का एक नाम, महात्मा गांधी का नाम भी है यह (4)।
7. किसी पर दया करना (4)।
क. ...के महीने में मुसलमान रखते हैं रोजा (5)।

ऊपर से नीचे

क. इस राज्य की राजधानी है दिसपुर (4)।
ख. आरोक पिसी और आग पर सेकी मांस की गोली या टिकिया कहलाती है...(4)।
5. समुद्र का पानी...होता है (5)।
6. सड़क बनाने में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण है (5)।
8. नृत्य में...लचकाते हैं (4)।
9. अग्निकुण्ड या होम को यह भी कहते हैं (4)।

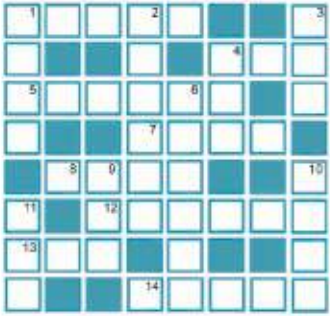

ACROSS

1. Strength of mind or feeling (5).
4. Appearance of a person, The wind (3).
5. A golf club for long strokes (6).
7. To make equal, still (4).
8. Chief person in a play or poem (4).
12. In the end, After much delay (2,4).
13. Fighting, Hostility, Enmity (3).
14. Nervous excitement (5).

DOWN

1. Gradually grow faint and disappear (4).
2. An area of thickets of trees among which live (6).
3. Manner of doing things (3).
4. Two persons singular present of BE (3).
6. To develop gradually (6).
9. The organ of hearing (3).
10. Destiny, Luck, A famous person (4).
11. A female sheep (3).

Answer

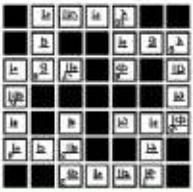

सूरज हुआ मद्धम

सर्दी आयी सर्दी आयी
ठंडी हवाएं साथ लायी।
लोहरा पड़ता पला-पला
हुआ-सा लगता भला

पेड़-पौधे भी ठंडे हुए
ओस उन पर डेरा जमाए।
सूरज दादा देर से चमकते
सभी धूप के पीछे-पीछे चलते।

धूप थोड़ी राहत दिलाये
स्कूल जाने में आलस आये।
सूरज दादा जल्दी चमको
अब खेलने दो हमको।

-रेखा सिंघल, मेरठ, हरिद्वार (उत्तराखंड)

बालमंच

अभिषेक सोनी
रहटोल (म.प्र.)

सोहेल रंगरेज
कांकेर (छत्तीसगढ़)

किरण चौधरी
जोधपुर (राज.)

लो आया वसंत

फिर आया वसंत
खिल उठे गुलशन सुहाने
मुस्काए पेड़ पुराने।
खो गया देखो हेमंत
आया-आया फिर वसंत।
निखरी-संवरे लगे बाग
धरती लगी रंग बिरंगी।
रंगोली-सा सजा पथ
आया-आया फिर वसंत।
सरसों लगती इतराने
लगी क्यारी को सजाने।
फूल पीले लगते सोने
आया-आया फिर वसंत।
शबनम लगी है छाने
लगती मोती के दाने।
हरियाली छायी बेअंत
आया आया फिर वसंत।

-मन मखाड़, उज्जैन (म.प्र.)

लिटिल स्टार

फिल्म और टीवी सीरियल के माध्यम से बाल अभिनेता निकुंज पांडेय आज लिटिल स्टार की श्रेणी में जा खड़ा हुआ है। कॉमेडी मूवी 'यमला पगला दीवाना' में इस प्रतिभा का अभिनय मुंह से बोला सभी बेजोड़ के सरदार पुत्र के किरदार में वह सबसे वाह-वाही लूटने में सफल रहा।

निकुंज पाण्डेय को अभिनय की प्रेरणा फिल्मों में काम कर रहे बाल कलाकारों से मिली। उनकी देखादेखी वह घर पर दर्पण के सामने मोनो-एक्टिंग करने का प्रयास करने लगा। स्कूल के टीचर ने भी उसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अवसर दिया। उसकी योग्यता को नई परवाज देने के लिए परिवार के सभी सदस्यों ने उसे समर कैम्प के एक्टिंग वर्क-शॉप्स में भेजने का फैसला किया। वहां उसे अभिनय, मंच, साउंड, कैमरा, लाइट्स और संवाद अदायगी की नई समझ मिली। वह कहता है, 'छोटी उम्र में ही मुझे मॉडल के बतौर काम मिलने लगा। मैं निर्देशक के कहे अनुसार एड-फिल्मों और प्रिंट पब्लिसिटी में आगे बढ़ चला। धीरे-धीरे मेरी पहचान बनने लगी। फिल्मों के प्रस्ताव भी आने लगे।'

निकुंज पांडेय

फिल्म 'यमला पगला दीवाना' के बारे में जब उसे पता चला तो वह भी अपने फोटोग्राफ्स के साथ सैट पर पहुंचा। कई बच्चों की भीड़ में से उसे चयनित किया गया। निकुंज पांडेय बताता है, 'मेरा मानना है कि प्रयास करते समय मन की सभी शंकाओं को दरकिनार कर देना चाहिए। हमारा पूरा फोकस अपने लक्ष्य पर होना चाहिए। इसी सूत्र की बदौलत मुझे बिग प्रोजेक्ट का सदस्य बनने का मौका मिला।' फिल्म के बाद टीवी सीरियल 'छोटी बहू' में भी उसने अहल और लम्बी भूमिका में सराहना बटोरी। अब वह दो फिल्मों की शूटिंग में व्यस्त है। ये फिल्में इस वर्ष रिलीज होंगी।

निकुंज पढ़ाई में भी अव्वल है। वह शूटिंग के लिए स्कूल की छुट्टी नहीं करता। बल्कि पढ़ाई और शूटिंग में तालमेल बनाकर आगे बढ़ रहा है। उसे बाल पत्रिकाओं में रचनाएं पढ़ना अच्छा लगता है। उसकी इच्छा है कि वह डॉक्टर बने।

-राजू कावरी रियाज

शब्द युग्म

अमान- सरल
आसन्न- निकट
आहट- ध्वनि
आहत- घायल
अभ्यास- बार-बार करना
आभास- प्रतीत होना
आदम- प्रथम मानवीय रचना
आदिम- प्रारंभिक
परित्याग- त्याग
परिहार- रक्षण

पर्यायवाची शब्द

दण्ड- डण्डा, लाठी, दमन
देह- शरीर, काया, वपु, घट
दुख- वेदना, पीड़ा, यातना, खेद
दक्ष- चतुर, कुशल, ब्रह्मा का पुत्र
दुर्गा- चण्डी, चामुण्डा, कालिका, सुभद्रा

एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है।
One fish inflects the whole water.
एक ही थैली के चट्टे-बट्टे।
Cast in the same mould.
एक अनार सौ बीमार।
One post and one hundred candidates.
एक कान सुनो, दूसरे कान उड़ा दो।
In at one ear and out at the other.
एका बड़ी शक्ति है।
Union is strength.

To cast a spell- जादू डालना।
In the present case- प्रस्तुत विषय में।
This being the case- ऐसा होते हुए।

नॉलेज बैंक

फरवरी-II 2014

अंतर है

Flair- जन्मजात कौशल
Flare- आग बबूला होना, चमक, फैलना
Flea- पिस्सू
Flee- भाग जाना
floor- फर्श
Flour- आटा
Farmer- किसान
Former- भूत, पूर्व

एक के तीन

Alliance- एलायंस- गठबंधन- संयुक्ति
Connection- कनेक्शन-जोड़ना-संयोजनम्
Co-option-को-आपान-सहवरण-सहवरणम्
Solidarity-सोलिडेरिटी-एकजुटता-एकबद्धता
Coalition- कौआलीशन- साझा-सहयुति:, सहमिलनम्

लोकोक्तियां

तबेले की बला बंदर के सिर- किसी एक पर सबका दोष मढ़ देना।
तेते पांव पसारिये जेती लांबी सौर- अपनी सामर्थ्य के

उर्दू/ हिन्दी

कुली- सेवक, दास, नौकर
कुर्बान- बलि, न्योछावर, निसार
कुसूर- दोष, अपराध, जुर्म, त्रुटि
कुर्ब- समीपता, निकटता, नजदीकी
कुशाद- हर्ष, खुशी, लाभ, नफा, विजय

One Word

Study of Teeth- **Odontology**
A thing no longer in use- **Obsolete**
Science of coins or medals- **Numismatics**
A person with an evil reputation- **Notorious**

- जिसका त्याग न हो सके- अत्याज्य।
- जीतने, दमन करने की इच्छा- जिगीषा।
- वह समय जो दोपहर के बाद आता है- अपराह्न।
- जिससे आर-पार न देखा जा सके- अपारदर्शी।

प्रस्तुति: विजय शर्मा

art junction

भागो भूत आया

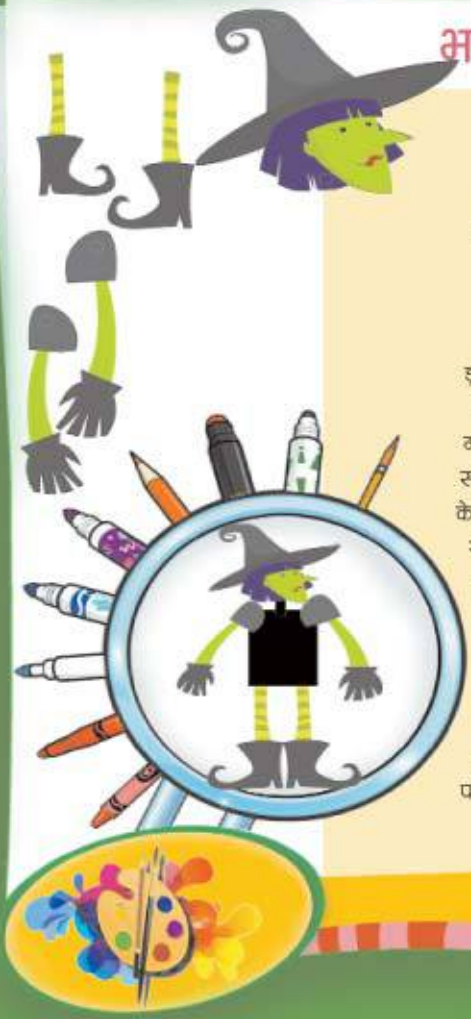

सामग्री

ड्रॉइंगशीट, पोस्टर कलर, फेविकोल, काला मार्कर पेन, डोरी।

विधि

ड्रॉइंगशीट, मुंह, कैप, हाथ-पैर आदि सभी अंग काट लें। हैंड ग्लव्ज भी काटकर रख दें। इन सभी भागों में रंग भर लें। सूखने के बाद सारे भागों को एक-दूसरे से जोड़कर धागों द्वारा बांध दें। उसकी टोपी में ऊपर की ओर धागा बांधकर ऐसी जगह लटकाएं, जहां हवा आती हो। हवा से इसका हर भाग हिलेगा। अगर इसके पैरों में घुंघरू बांध दें तो घुंघरू बजने पर यह और भी डरावना लगेगा।

मैं हूं जादूगर

सामग्री

ड्रॉइंगशीट, फेविकोल, पोस्टर कलर, क्राफ्ट पेपर, लकड़ी का टुकड़ा।

विधि

ड्रॉइंगशीट पर जादूगर के हर भाग की ड्रॉइंग बनाकर काट लें। हर भाग को एक-दूसरे से चिपका कर जोकर बना लें। बॉल की माला जैसी बनाकर दोनों हाथों में चिपका दें। क्राफ्ट पेपर का बो (गले की छोटी टाई) काटकर चिपका दें। लकड़ी के टुकड़े पर चिपका दें। एक ड्रॉइंगशीट का लम्बा-सा टुकड़ा काट लें। उसका एक सिरा जादूगर के पीछे, दूसरा हिस्सा लकड़ी के टुकड़े पर थोड़ी दूरी में चिपका दें। ये जादूगर का स्टेण्ड बन गया। इसे कहीं भी सजाइए।

पजल्स

A. स्टेप बाय स्टेप चित्र बनाना सीखो।

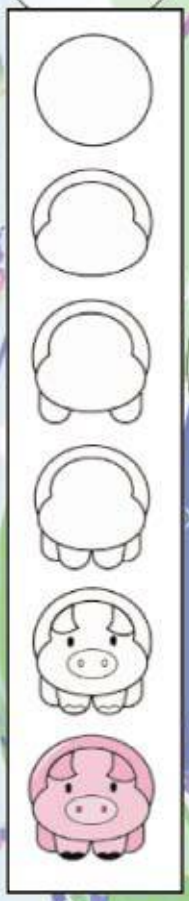

B. कुल कितनी ममी हैं।

C. बाहर लिखी स्पेलिंग को अंदर चौखानों में भरें।

D. बैलून से स्टार्ट करो, कैण्डिल तक पहुंचो।

उत्तर

E. अंतर बताओ।

F. बिंदु वाले स्थान पर रंग भरकर चित्र को बाहर निकालिए।

H. कौनसी छाया किसकी है।

G. डॉट टू डॉट

Kids Corner

कान्ता शर्मा
उम्र- 06 वर्ष
स्थान-भंभोरी, जयपुर (राज.)
रुचि-पढ़ना, कॉम्प्यूटिंग।

विधि नागर
उम्र- 6 वर्ष
स्थान-कोटपूतली (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

एहतशाम अहमद
उम्र- 6 वर्ष
स्थान- आसरा (बिहार)
रुचि-खेलना, पढ़ना।

अफरोज आलम
उम्र- 06 वर्ष
स्थान-सिहारवा
रुचि-पढ़ना, क्रिकेट।

राजन कुमार
उम्र- 06 वर्ष
स्थान-सादात, गाजीपुर
रुचि-पढ़ना, खेलना।

मोतीलाल
उम्र- 06 वर्ष
स्थान-रामाहमण (बिहार)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

शिवांगी स्वराज
उम्र- 06 वर्ष
स्थान-सीतामढ़ी (बिहार)
रुचि-ड्रॉइंग, पढ़ना।

आरती कंवर
उम्र- 06 वर्ष
स्थान-नारायणपुर (राज.)
रुचि-खेलना, डांसिंग।

रोहित शर्मा
उम्र- 6 वर्ष
स्थान-भंभोरी, जयपुर (राज.)
रुचि-क्रिकेट, पढ़ना।

स्वरूप सोनी
उम्र- 06 वर्ष
स्थान-बाड़मेर (राज.)
रुचि-पढ़ना, डांसिंग।

डॉली पटेल
उम्र- 6 वर्ष
स्थान-मेजा, जौनपुर (उ.प्र.)
रुचि-खेलना, डांसिंग।

प्रेम प्रकाश पटेल
उम्र- 06 वर्ष
स्थान-मेजा, जौनपुर (उ.प्र.)
रुचि-पढ़ना, क्रिकेट।

चेतानंद साहू
उम्र- 06 वर्ष
स्थान-धरोदा (छत्तीसगढ़)
रुचि-पढ़ना, पेंटिंग।

आदित्य जैन
उम्र- 06 वर्ष
स्थान-अचनाना (राज.)
रुचि-खेलना, पढ़ना।

राहुल कुमार
उम्र- 06 वर्ष
स्थान-खगड़िया (बिहार)
रुचि-क्रिकेट, पढ़ना।

हरीश चौधरी सारण
उम्र- 06 वर्ष
स्थान-बाड़मेर (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

रोहित गुप्ता
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-नई दिल्ली
रुचि-पेंटिंग, ड्राईंग।

निर्मल मेघवाल
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-लुनावा, पाली (राज.)
रुचि-क्रिकेट, पढ़ना।

साक्षी सैनी
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-जयपुर (राज.)
रुचि-पढ़ना, डांसिंग।

हर्षित विश्वकर्मा
उम्र- ९ वर्ष
स्थान-जौनपुर (उ.प्र.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

उमंग सैनी
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-जयपुर (राज.)
रुचि-सिंगिंग, पढ़ना।

नचिकेता बाल
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-लारी, अरवल (बिहार)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

कुणाल धीवर
उम्र- ९ वर्ष
स्थान-चास (झारखंड)
रुचि-ड्राईंग, पढ़ना।

मानसी विश्वकर्मा
उम्र- क वर्ष
स्थान-जौनपुर (उ.प्र.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

अनुश्री धीवर
उम्र- ९ वर्ष
स्थान-चास (झारखंड)
रुचि-संगीत, पढ़ना।

विश्वदीप सैनी
उम्र- क वर्ष
स्थान-रियाबड़ी, नागौर (राज.)
रुचि-खेलना, टीवी।

शालू शर्मा
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-दाखिल, कोटपूतली (राज.)
रुचि-पढ़ना, घूमना।

पवन यादव
उम्र- ख वर्ष
स्थान-गाजीपुर
रुचि-खेलना, कहानियाँ सुनना।

मोनिशा मीणा
उम्र- ९ वर्ष
स्थान-कोटा (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

अनिल कुलश्रेष्ठ
उम्र- ख वर्ष
स्थान-मेड़ता रोड (राज.)
रुचि-पढ़ना, टीवी।

अलंकार विश्वकर्मा
उम्र- - वर्ष
स्थान-जौनपुर (उ.प्र.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

कुलदीप आशियां
उम्र- ख वर्ष
स्थान-उदयपुर (राज.)
रुचि-पढ़ना, घूमना।

हिमालय में अद्भुत वन्यजीवन

हिमालय में 16,000 फीट की ऊंचाई पर जब हम सांस लेते हैं तो फेफड़े में हवा की जितनी मात्रा घुलती है, वह समुद्रतल में घुलने वाली हवा के मुकाबले सिर्फ आधी होती है। उस ऊंचाई पर शीत के बावजूद, सूरज की किरणें यहां के कम ऑक्सीजन वाले वातावरण को भेदती हैं और चोटियों पर हमेशा बर्फ जमी रहने के बावजूद पानी का अभाव बना ही रहता है। हिमालयी क्षेत्रों में गुजर-बसर करने वाला हर जीवन काफी खतरों के बीच जीता है। हिमालयी प्रदेश जीव-जंतुओं को जीवन-यापन की आसान परिस्थितियां नहीं सौंपते। यहां सिर्फ कठोर और भाग्यशाली ही निर्वाह कर सकते हैं।

रुंबाक घाटी

भारत के हेमिस नेशनल पार्क में रुंबाक घाटी अ□सर हिमाच्छादित रहती है। रुंबाक तक पहुंचने वाली हवा प्रायः शुष्क और ठंडी होती है। इसके बावजूद सैंकड़ों वर्षों से इंसान रुंबाक में जीवन बसर करते आए हैं। यहां रहने वाले परिवार घरेलू पालतू पशुओं के दूध और मांस पर निर्भर रहते हैं। इन जानवरों का गोबर उनके लिए ईंधन के काम आता है।

वसंत के मौसम में लोग यहां जौ और मटर उगाते हैं। वे घाटी में हर साल एक फसल लेते हैं, जिसकी सिंचाई के लिए वे झरनों को किसी तरह मोड़कर अपने खेतों की ओर लाते हैं और तब कहीं जाकर जो फसल तैयार होती है, वह सर्दियों के हाड़ कंपा देने वाले महीनों में इन परिवारों और उनके जानवरों के लिए किसी तरह बस पूरी पड़ती है। उधर, गर्मियों के महीनों में किसान अपने मवेशियों को ऊंचाई वाले चरागाहों की तरह ले जाते हैं, लेकिन गर्मियों का मौसम महज आठ सप्ताह का होता है और घाटी में प्राणी एकदम खतरों से घिरा महसूस करते हैं, लेकिन इनके पास समूह में रहने पर बाकायदा चेतावनी प्रणाली होती है।

निराला है वन्यजीवन

मैरमॉट्स तेजी से प्रजनन करने वाले कृंतक प्राणी (रॉडेन्ट) हिमालयी मांसभक्षियों जैसे हिम तेंदुए और भेड़िए के लिए भोज्य पदार्थों के अहम् स्रोत होते हैं। उनके अवशिष्ट पदार्थ से घास आदि को बढ़त में मदद मिलती है। अकेले रहने पर ये गोल्डन ईगल्स वसंत के शुरू में प्रजनन करते हैं ताकि गर्मी पड़ने पर अपने शिशुओं का पालन कर सकें और अधिक जीव-जंतुओं का शिकार कर सकें। गोल्डन ईगल शायद ही कभी कुछ पीता है, □योंकि वह मांस से ही नमी सोखता है। इस पक्षी के बेहद कुशल फेफड़े इसे विषम जलवायु में भी जीवन-यापन में मदद करते हैं।

हॉर्न्ड लार्क निचले क्षेत्रों से गर्मियों के महीनों में आने वाला प्रवासी पंछी है। वह कीड़े-मकोड़ों का भक्षण करता है जो कि गर्मियां शुरू होने पर पनपते हैं।

शिकारी हिम तेंदुआ शाम के झुटपुटे में और रात के समय शिकार करता है। हिम तेंदुआ दुर्लभ जंतु है और कुशल पर्वतारोही भी। उसके पैर एकदम छोटे आकार के होते हैं और कान तथा अंडकोश उसकी चमड़ी पर पड़े प्राकृतिक बालों के ढेर में छिपे रहते हैं। बहुत ठंड पड़ने पर यह खुद को अपनी घनी पूंछ से ढंक लेता है।

ति□बती तेंदुए मिल-जुलकर किसी बड़े शिकार को मारने निकलते हैं। उधर, भेड़िए खुले में शिकार करना पसंद करते हैं और वे लंबी दौड़ के बाद अपने शिकार को मार गिराने में कामयाब रहते

भराल हिमालयी क्षेत्रों में पायी जाने वाली भेड़ों और बकरियों की छह अलग प्रजातियों में से है। लेह के विषम वातावरण में से अधिकतम ऑक्सीजन लेने के लिए भराल के खून में लाल रक्त कोशिकाएं अधिक होती हैं। उसके छोटे आकार के पैरों की वजह से शरीर से तपिश का नुकसान कम होता है और गुरुत्व केंद्र भी नीचे रहता है। भराल के खुर रबड़नुमा होते हैं और जकड़ने में मददगार होते हैं। जैसे-जैसे यह पाचन करता है उसका शरीर ताप उत्पन्न करता रहता है। उसके खोखले बालों के रेशे उस ताप को सुरक्षित रखते हैं और भराल के शरीर की ऊपरी त्वचा उसे प्राकृतिक वातावरण में छिपाकर रखने में सक्षम

नीचे दिये गए सवाल का सही जवाब दें, और एनीमल प्लेनेट से इनाम पाएं

- भराल किस नाम से जाना जाता है?
  (ए) नउर
  (बी) भेड़
  (सी) मालू
  (डी) मूर्रे भेड

Name.....

Address.....

City.....Pin.....Phone.....

Date of birth...../...../.....

Email id.....

एंट्री फॉर्म को पूरा भरें और इसे इस पते पर भेज दें-

Animal Planet- Balhans Contest

P.O. Box No. 10534, New Delhi- 110 067

हिमालयी क्षेत्रों में वन्य जीवन के बारे में और जानकारी के लिए हर बृहस्पतिवार रात 8 बजे एनीमल प्लेनेट पर 'वाइल्ड एशिया' देखें।

पिछली बार के सवाल 'भूमध्य रेखा एक काल्पनिक रेखा है जो पृथ्वी को दो भागों में बांटती है। ये दो भाग क्या कहलाते हैं,' का सही उत्तर है – उत्तरी एवं दक्षिणी गोलार्ध।

शर्तें : कृपया प्रवेश पत्र में अपने विवरण भरें, सही जवाबों पर निशान लगाएं और ऊपर दिये गए पते पर सामान्य डाक से भेजें। इस प्रतियोगिता के छपने के दस दिन के अंदर डिस्कवरी कम्युनिकेशन्स इंडिया (डीसीआईएन) द्वारा प्राप्त सही एंट्रियों में से विजेताओं का चुनाव किया जाएगा। यदि कई एंट्री सही निकलती हैं, तो डीसीआईएन किन्हीं पांच प्रतियोगियों को रैंडम आधार पर चुनेगा और उन्हें विजेता घोषित करेगा। विजेताओं और प्रतियोगिता के नियमों के सिलसिले में डीसीआईएन का फैसला अंतिम और बाध्य होगा। इस प्रतियोगिता से जुड़े सारे नियम जानने के लिए कृपया देखें।

www.discoverychannel.co.in/animalplanet-balhans contest

रंग दे प्रतियोगिता परिणाम

जनवरी प्रथम, 2013

क. रुचि जैन, कोटा (राज.)
ख. ओमी त्रिवेदी, लखनऊ (उ.प्र.)
प. प्रकाश अग्रवाल, कुचामन सिटी (राज.)
ब. गवल भटनागर, जयपुर (राज.)
भ. सिद्धार्थ कुमार शर्मा, गुगलकोटा, अलवर (राज.)
म. श्वेता नामा, अजमेर (राज.)
स. अनिमेष मारवु, भीलवाड़ा (राज.)
ट. मुनीश्वरी डोगरा, नई दिल्ली
-. देवन्द्र शर्मा, कांवट, सीकर (राज.)

(विजेताओं को सही-सही उपहार पुस्तकालय भेजे जा रहे हैं)

सराहनीय प्रयास

क. दृष्टि माथुर, जयपुर (राज.)
ख. अश्विनी कुमार, भलुआ (बिहार)
प. जोगिता जमार, सुमेरपुर (राज.)
ब. स्मृति वर्मा, बाल्सरगंज (उ.प्र.)
भ. हर्ष कुमार, बाढ़, पटना (बिहार)
म. भीम वर्मा, सूरतगढ़ (राज.)
स. स्नेहा सिंह, कानपुर (उ.प्र.)
ट. दिव्या श्रीवास्तव, जयपुर (राज.)
-. रमना बनो, बहराइच (उ.प्र.)
क. अदिति कुमारी, बक्सिया (बिहार)
ख. जसवन्त सिंह, भूप, भरतपुर (राज.)
प. पुनीता विश्वकर्मा, बलरामपुर (उ.प्र.)
ब. वैभव सिंह चौहान, सीकर (राज.)
भ. आयुष सिकला, श्रीगंगानगर (राज.)
म. मनमेश शर्मा, कोटा (राज.)

ज्ञान प्रतियोगिता- 341 का परिणाम

क. अलंकृता वर्मा, नई दिल्ली
ख. निधि गुप्ता, नोयडा (उ.प्र.)
प. आशीष कुमार, हनारा, भरतपुर (राज.)
ब. मानवी जांगिड़, लाडचूं, नागौर (राज.)
भ. भूदेव शर्मा, मनोहरपुर, जयपुर (राज.)
म. प्रसुप्ति शर्मा, कोटपुतली, जयपुर (राज.)
स. हर्ष बी., अहमदाबाद (गुजरात)
ट. विजया तिवारी, सिलीगुड़ी (प. बंगाल)
-. अरुण कुमार प्रजापत, मसुरिया, जोधपुर
क. राजेश कुमार कनौजिया, नई दिल्ली

ज्ञान प्रतियोगिता- 341 का सही उत्तर

स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी- न्यूयॉर्क, एफिल टावर-पेरिस, पीसा की मीनार-इटली, ओपेरा हाउस-सिडनी।
ए. आकाश की
बी. राजस्थान
सी. इंद्रप्रस्थ
डी. कोलकाता
ई. शतरंज

(विजेताओं को सही-सही उपहार पुस्तकालय भेजे जा रहे हैं)

ज्ञान प्रतियोगिता

344

क. माइकल शुमाकर का संबंध है ?
(अ) स्केटिंग से
(ब) फॉर्मुला रेस से
(स) साकर से

ख. अरविन्द केजरीवाल कहां के मुख्यमंत्री हैं ?
(अ) झारखंड
(ब) उत्तराखंड
(स) दिल्ली

फ. नरेन्द्र मोदी का संबंध किस राजनैतिक पार्टी से है ?
(अ) राजपा
(ब) भाजपा
(स) बसपा

घ. फिल्म चैन्नई एक्सप्रेस की हीरोइन कौन है ?
(अ) प्रियंका चौपड़ा
(ब) दीपिका पादुकोण
(स) ऐश्वर्या राय

ङ. बर्लिन किस देश की राजधानी है ?
(अ) जापान
(ब) जर्मनी
(स) जेनेवा

राजनीति से जुड़ी इन शख्सियतों को पहचानिये।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ज्ञान प्रतियोगिता– 344

नाम.....

पता.....

पोस्ट.....

जिला.....

राज्य.....

जीतो 1000 रुपए के नकद पुरस्कार

चयनित दस प्रतिभागियों को 100-100 रुपए (प्रत्येक को सौ रुपए) भेजे जाएंगे।

हमारा पता: बालहंस, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राजस्थान)

रंग दे

1000 रुपए के पुरस्कार

दोस्तो, इस चित्र में आपको भरने हैं, प्यारे-प्यारे रंग। चटख रंगों को भर कर, चित्र को कलात्मक बनाकर (बालहंस कार्यालय, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर) में दिनांक 20 फरवरी, 2014 तक भिजवाना है। अगर आपकी उम्र 15 वर्ष या इससे कम है, तभी आप इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। अपना नाम, आयु व पूरा पता साफ-साफ लिखना। सिर्फ डाक से भेजी गई प्रतियां ही स्वीकार की जाएंगी। चयनित दस प्रतियों को 100-100 रुपए भेजे जाएंगे।

नाम.....

पता.....

.....

.....

पोस्ट.....

जिला व राज्य.....

ढूंढो तो...

नीचे दी गई आकृतियों को ऊपर वाले चित्र में ढूंढना है। इतना करके चित्र में रंग भी तो भरो, देखो कितना मजा आता है!

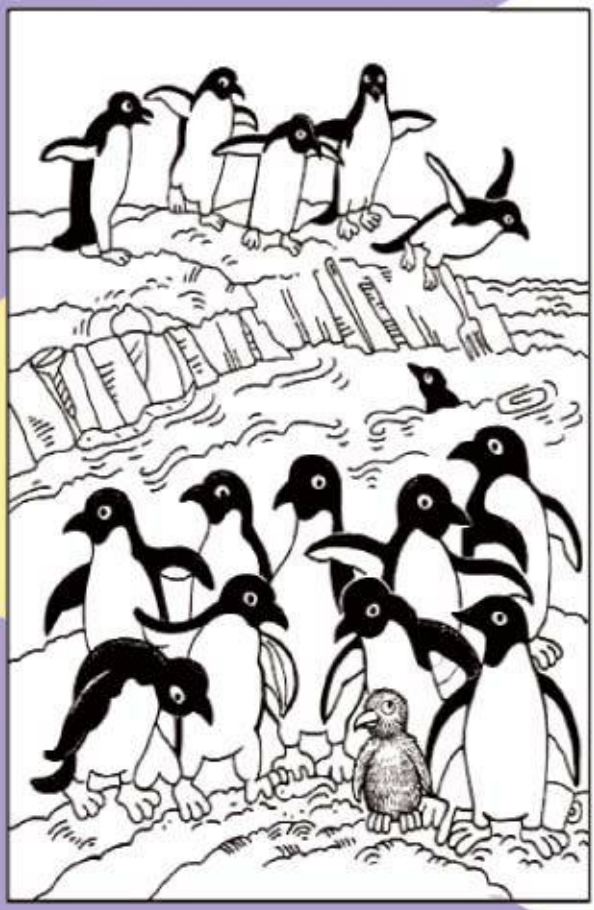

ई-मैन - 14

प्रस्तुति: उन्नी कृष्णन रिडनकूर

और वे एमस्टर पॉइंट पर उनका इंतजार करते रहे।
व्हेल्स...!
देखो...! लोग व्हेल्स पर सवार हैं...?!
आक्रमण...!

व्हेल्स सेना को देखकर सेम्युल मिक्सॉन बिल्कुल नहीं घबराया।
आक्रमण...!

और भाले हवा में फेंके जाने लगे...
आह...

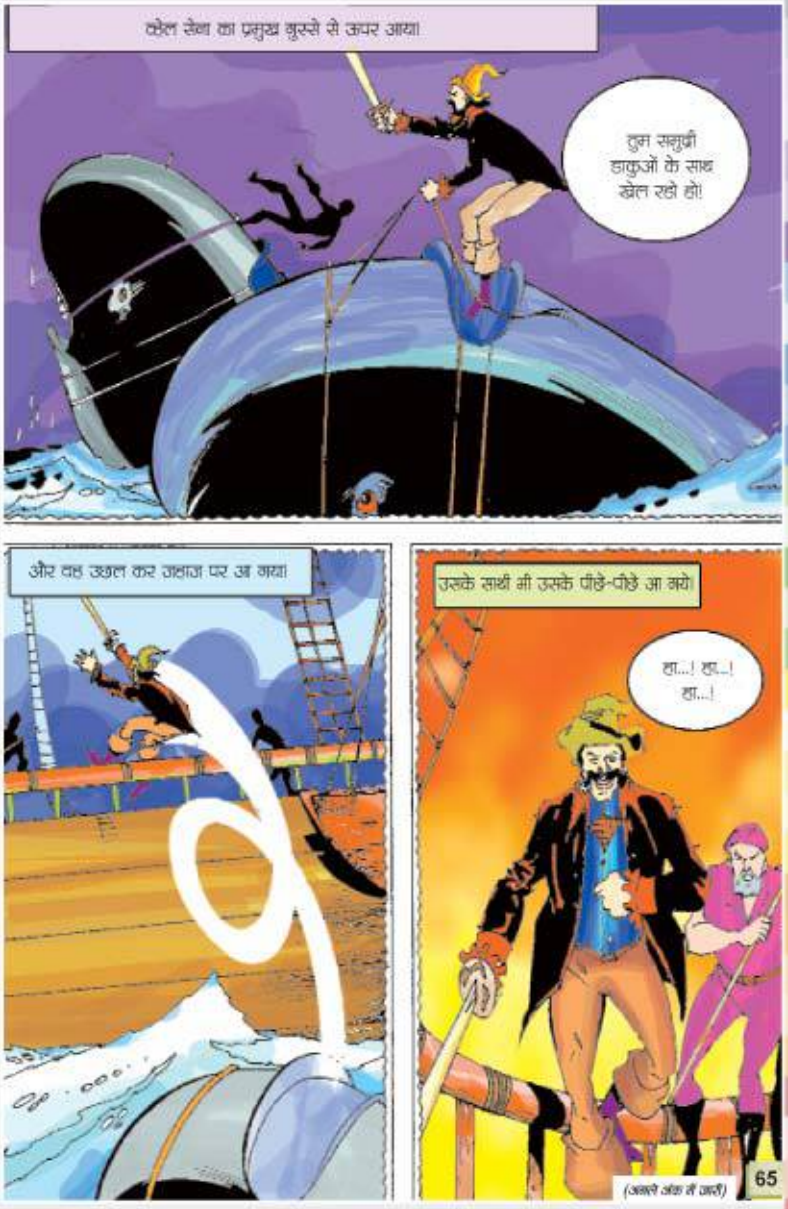
खेल सेना का प्रमुख बुरूसे से ऊपर आया।
तुम समुद्री डाकुओं के साथ खेल रहे हो!
और वह उछल कर जहाज पर आ गया।
उसके साथी भी उसके पीछे-पीछे आ गये।
हा...! हा...! हा...!

(अगले अंक में जारी)

जनवरी द्वितीय, अंक

कैसा लगा

बालहंस मेरी पसंदीदा मैगजीन है। मैं इसे गत पांच वर्षों से पढ़ रहा हूं। यह गागर में सागर है। यह हमारा मनोरंजन तो करती ही है, साथ ही कहानियों के माध्यम से नैतिक शिक्षा भी देती है। इस अंक की कहानियां रोचक और ज्ञानवर्द्धक थीं। चित्रकथाएं सीख देने वाली हैं। मुझे स्पीकन इंग्लिश, मोबाइल बैंकिंग सहित अंग्रेजी से संबंधित जानकारी पढ़ना अधिक रुचिकर लगता है।

- दरखशां जहां,
आजीवक, नालंदा (बिहार)

मैं बालहंस का नियमित पाठक हूं। मेरे अनुभव के अनुसार जिस प्रकार फूलों में गुलाब का, पेड़ों में चंदन का जो स्थान है, वही स्थान पत्रिकाओं में बालहंस का है। इसका प्रत्येक अंक हृदयस्पर्शी होता है। मैं गत पन्द्रह-सोलह सालों से इसका पाठक हूं। मेरे पास इसके सैकड़ों अंक संगृहीत हैं। बालहंस बच्चों में रचनाशीलता बढ़ा रही है।

- नचिकेता वत्स,
लारी, अरवल (बिहार)

बालहंस है अनमोल खजाना
काम बच्चों का ज्ञान बढ़ाना।
खुद पढ़ना दूसरों को पढ़ना
इसकी अच्छाइयां सबको बताना।
बच्चों का वर्षांड हो जब
उनको गिफ्ट बालहंस करना।
दोस्तों को बालहंस पढ़ाकर
पाठकों की संख्या बढ़ाना।
बालहंस जब बाजार में आये
तुरन्त उसको घर में लायें
अपने बच्चों को देकर
खुशी से सराबोर हो जाना।

रश्मि निगम,
बलरामपुर (उ.प्र.)

इनके पत्र भी मिले

- **आबिद हुसैन**, कोटा (राज.)
- **आलोक नामा**, केकड़ी (राज.)
- **दिव्यंका चौधरी**, पलीका, नोहर (राज.)
- **महावीर सिंह चौधरी**, नागौर (राज.)
- **प्रतीक्षा कुमावत**, कपासन (राज.)
- **मोजिबुल हक**, छपरा (बिहार)
- **जितेन्द्र कुमार**, खटूंदरा, सीकर (राज.)
- **संजना रूपेश**, कानपुर नगर (उ.प्र.)
- **राजदीप सिन्हा**, किशनगंज (बिहार)
- **दीपक कुमार पटेल**, हिसुआ (बिहार)
- **आईना चौधरी**, पलीका नोहर
- **प्रफुल्ल कुमार**, फैजाबाद (उ.प्र.)
- **नेमिश भट्ट**, बसिवाड़ा (राज.)
- **सुमैल अनवर**, जहानाबाद (बिहार)
- **मनीष कुमार**, बोटी कोहड़ा (बिहार)
- **मयंक गुप्त**, इन्दौर (म.प्र.)

सब्सक्रिप्शन फॉर्म

ग्राहक का नाम.....

पता (जिस पते पर बालहंस चाहिए)-

नाम.....पता.....

.....

पोस्ट.....जिला.....राज्य.....

कितने समय के लिए- द्विवार्षिक (480/-रुपए)..... वार्षिक (240/-रुपए) ..... अर्द्धवार्षिक (120/-रुपए).....

ड्राफ्ट संख्या .....मनीऑर्डर संख्या .....

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से बालहंस, जयपुर के नाम भिजवाएं। ड्राफ्ट के साथ इस फॉर्म को भी संलग्न कर भेज सकते हैं।

सब्सक्रिप्शन व वितरण संबंधी पूछताछ के लिए कृपया फोन नं. 0141-3005825 पर संपर्क करें।

राशि इस पते पर भेजें-
बालहंस (पाक्षिक)
वितरण विभाग
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान), पिन- 302 004

.....
ग्राहक का पूरा नाम व हस्ताक्षर

नोट: बालहंस पंजीकृत साधारण डाक से भेजी जाती है। डाक अव्यवस्था के कारण अंक न मिल पाने की सूचना एक माह के भीतर दे देवें। अंक उपलब्ध होने पर ही दुबारा भेजा जाएगा। देर से भेजी गई अपीलें अस्वीकार होंगी।

PARLE
TOM & JERRY
MILK SHAKTI
Milky Sandwich
लिमिटेड एडिशन
मिल्क शक्ति
मिल्की सैंडविच बिस्किट्स.
अनलिमिटेड मस्ती
टॉम एंड जेरी और
मिल्की क्रीम के साथ.
पेश है नया मिल्क शक्ति मिल्की सैंडविच बिस्किट्स,
टॉम एंड जेरी के साथ. आपके मनपसंद टून्स के
चेहरेवाले इन स्वादिष्ट बिस्किट्स के
अंदर भरे हैं मज़ेदार, क्रीमी दूध की खुशियां.
तो जल्दी कीजिए, अपना पैक आज ही ले आइए!
और टॉम एंड जेरी के साथ मिल्की क्रीम के
मस्तीभरे स्वाद का मज़ा लीजिए.

डॉ. हेमन्त बेन्दा
(एक्यूपंक्चर विशेषज्ञ)

ॐ हताश रोगियो के लिये नई आशा...

BENDA
ACUPUNCTURE

क्या आप बीमारी से थक चुके है ?
क्या आप दवा खाते खाते परेशान है ?
क्या आप जिन्दगी से हताश हो गये ?

चीनी चिकित्सा द्वारा ईलाज

नस दबने से उत्पन्न रोगों में 90% सफल परिणाम।
डॉ. बेन्दा
द्वारा बिना दवा,
बिना ऑपरेशन के प्राकृतिक
ढंग से रोगी स्वस्थ हुये।

कमर दर्द (स्लिप डिस्क), गर्दन दर्द
घुटना दर्द, साईटिका (कमर से पंजे तक दर्द)
आदि का ईलाज सम्भव।

- श्वास रोग (दमा)
- गठिया (जोड़ों में दर्द)
- सरदर्द (माईग्रेन)
- लिखते समय हाथ कांपना (पार्किन्सन)
- गर्दन में जकड़न/चक्कर आना
- एड़ी व कलाई में दर्द
- टेनिस एल्बो • एलर्जिक जुकाम
- कंधे व कूल्हे की जकड़न व दर्द
- बहरापन (कान में आवाज आना)
- पैरो में सुन्नता व दर्द
- लकवा (चेहरे व हाथ पांव का)
- ट्राईजेमिनल न्यूरालजिया
- नशा मुक्ति
- रीढ़ की हड्डी का टेढ़ापन
- मोटापा घटायें, हाईट बढ़ायें

सेरेब्रल पाल्सी से ग्रस्त बच्चा
ईलाज के बाद पूर्ण स्वस्थ

पुत्रराम : उम्र 6 वर्ष
निवासी : सिन्धी, माडमेर

— आपका बच्चा —

सेरेब्रल पॉल्सी, डाउन सिंड्रोम, मंगोलिज्म

आदि रोगों से बच्चा ग्रस्त है तो तुरन्त सम्पर्क करें। बच्चे के हाथ पैर व गर्दन पर नियन्त्रण नहीं, मुंह से लार गिरना, शारीरिक मानसिक विकास धीरे धीरे होना, मंद बुद्धि, एड़ी उठाकर चलना। एक हाथ या एक पैर काम नहीं करता, पढ़ाई में कमजोर, तुतलाना अर्थहीन गुस्सा करना, पिशाब गिरा करना आदि का ईलाज।

सेरेब्रल पॉल्सी एक भयावह बीमारी है जिसमें बच्चे को ताउम्र अपाहिज की जिन्दगी बितानी पड़ती है। सही समय पर यदि इस रोग में ग्रसित बच्चे का ईलाज एक्यूपंक्चर पद्धति से करवाया जाए तो इस बीमारी से मुक्ति मिल सकती है एवं बच्चा आसान जिन्दगी जी सकता है। बच्चे की उम्र जितनी कम होगी बच्चे के ठीक होने की उतनी ही ज्यादा संभावना होगी। हमें बच्चों का लक्षणों के आधार पर एक्यूपंक्चर पद्धति से लम्बे समय तक ईलाज करवाना पड़ता है। विश्व में एक्यूपंक्चर चिकित्सा वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति है जिसमें सेरेब्रल पॉल्सी, डाउन सिंड्रोम, मंगोलिज्म ठीक हो सकती है। यहाँ ईलाज पूरा लिया हो। बेन्दा एक्यूपंक्चर सेन्टर से इस बीमारी से ग्रस्त कई बच्चे स्वस्थ होकर अपनी सामान्य जिन्दगी जी रहे है।

वर्षों पुराना विश्वसनीय चिकित्सा केन्द्र

बेन्दा एक्यूपंक्चर & स्लिमिंग सेन्टर

बोम्बे मोटर्स सर्कल, 11वीं चौपासनी रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
फोन : 0291-2648757, 9414295270 समय : सुबह 9 से 2 एवं सायं 5 से 7
E-mail : dr.hbenda@gmail.com Website : acupuncture.co.in

Parikrama

परिक्रमा पत्रिका एकमात्र पंजीकृत ट्रायोर्ट रजिस्टर्ड के लिए मुद्रक व प्रकाशक: सुरेश सिंह द्वारा एकमात्र संस्था प्रा. लि., केशवगढ़, चौपासनी रोड-2, प्रताप गौरवपथ केन्द्र, जोधपुर (राज.) से प्रकाशित एवं पंजा नं. 73-74, सिंह मोबिलिटी सेन्टर, प्रतापगढ़, जोधपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक, पी. 46202/06, सम्पादक: आशा प्रकाश जोशी